



Khandala Vibhag Shikshan Samiti's

SUSHILA SHANKARRAO GADHAVE MAHAVIDYALAYA, KHANDALA

(Arts, Commerce & Science)

(Permanently NonGranted)

Tal. Khandala, Dist. Satara, Pin - 412802

(AFFILIATED TO SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR)

महाराष्ट्र शासन उच्च व तंत्र शिक्षण विभाग यांचे आदेश क्र. एनजीसी २००७/(१८९/०७)/माशि-३

मंत्रालय विस्तार भवन, मुंबई - ३२ दिनांक २ जुलै २००७ नुसार मान्यता

Ph : (02169) 252112,

Email : rmkhandala@yahoo.in

www.ssgmkhandala.org

जा. क्रमांक :

दिनांक :

CRITERION - III

Research Innovations and Extension

3.3 Research Publication and Awards





KHANDALA VIBHAG SHIKSHAN SAMITI'S
SUSHILA SHANKARRAO GADHAVE MAHAVIDYALAYA, KHANDALA

Criterion III

Research, Innovation and Extension

Key Indicator: 3.3-Research Publication and Awards.

3.3.2. Number of Books and Chapter in edited volume/Book Published and Paper published in National/International Conference Proceeding per Teacher during the last five years.

2020-21

| Sr no | Name of book and chapter in edited volume published /paper in national /international conference proceedings | ISBN No | Name of publisher /journal and level |
|-------|--|------------------------|--------------------------------------|
| 1 | SET/NET/JRF Prashn patra 2, Dr. shiraj shaikh | ISBN-978-93-89944-90-7 | Nirali publication shivajinagar |
| 2 | vimarsh ke adhunatan aayam | ISBN-978-81-904853-0-2 | Dnyanjyoti publication ,delhi |


Principal
Sushila Shankarrao Gadhave Mahavidyalaya
Khandala, Tal. Khandala, Dist. Satara



91

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नवीनतम पाठ्यक्रम एवं पैटर्न पर आधारित।

सेट / नेट / जे.आर.एफ.

(एम.फिल., पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा के लिए अत्यंत प्रभावी एवं उपयुक्त)

हिंदी

प्रश्नपत्र - २

डॉ. सिराज हसन शेख

प्रा. उद्धव निंवा महाजन



 **NIRALI**
PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नए पाठ्यक्रम एवं पैटर्न पर आधारित।

सेट/नेट/जे.आर.एफ.

(एम.फिल., पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा के लिए
प्रभावी एवं उपयुक्त पुस्तक)

1012

नवीनतम पाठ्यक्रम

2022/01/08 16:14

हिंदी

प्रश्नपत्र - 2

विशेषताएँ

- नए पाठ्यक्रम पर आधारित।
- विद्यापीठ के नए प्रश्नपत्र के स्वरूप एवं मूल्यांकन के अनुसार।
- सुलभ एवं सरल भाषा।
- यज्ञ का मूलमंत्र - प्रगती!



लेखक

डॉ. सिराज हसन शेख
एम.ए., सेट., नेट.,
जे.आर.एफ., पीएच.डी., सी.पी.सी.टी.



प्रा. उद्धव निंबा महाजन
एम.ए., एम.एड.,
डिप्लोमा इन उर्दू लैंग्वेज

किंमत : ₹ 530.00

NIRALI
PRAKASHAN
ADVANCEMENT OF KNOWLEDGE

N341B

ISBN 978-81-8001-110-1



सेट-नेट : हिंदी

प्रथम आवृत्ती : जून 2020

(Poly Plates)

प्रकाशक

निराली प्रकाशन

अभ्युदय प्रगती, १३१२, शिवाजीनगर,
जंगली महाराज रोड, पुणे ४११ ००५.
फोन : (०२०) २५५१ २३३६/३७/३९
फैक्स : (०२०) २५५१ १३७९.
Email : niralipune@pragationline.com

योगिराज प्रिंटर अॅन्ड बाइंडर

सर्व्हे नं. १०/१, पुणे इंडस्ट्रियल इस्ट

नांदेड गाव रोड, ता. हब

पुणे ४११ ०२१

मो. : ९८५००४६५१७/९४०४२३३०

पुस्तक मिळण्याचे ठिकाण

प्रगती बुक सेंटर : पुणे : Email : pbcपune@pragationline.com

- १५७, बुधवार पेठ, रतन टॉकिसमोर, पुणे २. मो. ९६५७७०३१४८
- ६७६/म, बुधवार पेठ, जोगेश्वरी मंदिरासमोर, पुणे २. मो. ९६५७७०३१४७
- २८/अ, बुधवार पेठ, अंबर चौक, जप्पा बळवंत चौक, पुणे २. मो. ९६५७७०३१४२/९६५७७०३१४९
- १५२, बुधवार पेठ, जोगेश्वरी मंदिरासमोर, पुणे २. ✆ ८०८७८८१७९५

प्रगती बुक कॉर्पोरेशन : मुंबई : Email : pbcmumbai@pragationline.com

- अपूर्वा बिल्डिंग, शॉप नं. १, शारदाग्राम सोसायटी समोर, भवानी शंकर रोड, दादर (पश्चिम), मुंबई २८. ✆ (०२२) २४२२३५२६

प्रमुख वितरण केंद्रे

निराली प्रकाशन : पुणे

- ११९, बुधवार पेठ, जोगेश्वरी मंदिर मार्ग, पुणे ४११ ००२. ✆ (०२०) २४४५ २०४४ मो. ९६५७७०३१४५
Email : niralilocal@pragationline.com

निराली प्रकाशन : पावटी (पुणे)

- सर्व्हे नं. २८/२७ धायरी-कावज रोड, पारी कंपनीजवळ, पुणे ४११ ०४१. ✆ (०२०) २४६९ ०२०४
मो. ९६५७७०३१४३ Email : bookorder@pragationline.com

मुंबई

- ३८५, एस.बी.पी. मार्ग, रसधरा को. ऑप. हाउसिंग सोसायटी लि., गिरगाव, मुंबई ४०० ००४.
✆ (०२२) २३८५ ६३३९/२३८६ ९९७६ फॅक्स : (०२२) २३८६ ९९७६. मो. ९३२०१२९५८७
Email : niralimumbai@pragationline.com

वितरक शाखा

निराली प्रकाशन :

- ३४, बी. बी. गोलांनी मार्केट, नवी पेठ, जळगाव ४२५ ००१. ✆ (०२५७) २२२ ०३९५. मो. ९४२३४९१८६०
Email : niralijaon@pragationline.com
- न्यू महाद्वार रोड, केदार लिम फ्लाय, पहिला मजला, आय. डी. बी. आय. बँकसमोर, कोल्हापूर ४१६ ०१२.
मो. ९८५० ०४६ १५५ Email : niralikalhapur@pragationline.com
- लोकेशन कर्मचारी कॉम्प्लेक्स, दुकान नं. ३, सीतावर्डी, नागपूर ४४० ०१२. ✆ (०७१२) २५४७ १२९.
Email : niralinagpur@pragationline.com

Note : Every possible effort has been made to avoid errors or omissions in this book. In spite this, errors may have crept in. Any type of error or mistake so noted, and shall be brought to our notice, shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher, nor the author or book seller shall be responsible for any damage or loss of action to any one of any kind, in any manner, therefrom. The reader must cross check all the facts and contents with original Government notification or publications.

इतर शाखा : दिल्ली, बंगळूर, हैदराबाद, चेन्नई
• www.pragationline.com



विमर्श के अधुनातन आयाम



संपादक
शिराज शेख

उप-संपादक
प्रियंका चौहान



डॉ. सिराज हसन शेख

शिखा : एम.ए. सेट, नेट, जे. आर. एफ., पीएच.डी.

भाषा ज्ञान : मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू

प्रकाशन एवं संपादन : - हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान (2014)

पुस्तक का संपादन - नेट, सेट, जे.आर.एफ. प्रतियोगिता परीक्षा पुस्तक

(2016) - राष्ट्रवाणी पत्रिका के 'आदिवासी विमर्श विशेषांक' (2015) का सह

संपादन - हिन्दी भाषा और साहित्य को पुणे का योगदान (2018, आर के

पब्लिकेशन मुंबई) - हिन्दी नेट / जेआरएफ, सेट, एम. फिल., पी-एच.डी प्रवेश परीक्षा मार्गदर्शक

पुस्तक (2020, निराली प्रकाशन, पुणे) - राष्ट्र, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रसेवा (प्रकाशनाधीन)

उपलब्धियाँ : - 'संस्कृति इन्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी' ई-रिसर्च जर्नल के बोर्ड ऑफ स्टडीज

का आजीवन सदस्य - आलोचना, समकालीन भारतीय साहित्य, वीणा, अक्षरा, हिंदुस्तानी जवान,

राष्ट्रवाणी, समिति संवाद, शोध-दिशा आदि स्तरीय पत्रिकाओं में लगभग 50 शोधलेख प्रकाशित

- दै लोकमत समाचारपत्र में स्वामी विवेकानंद, आ. विनोबा भावे, डॉ. पदमजा घोरपट्टे, मेजर

सरजूप्रसाद 'गयावाला' आदि पर केंद्रित स्तंभालेख प्रकाशित - राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय और

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभाग तथा 50 शोध-निबंधों का प्रस्तुतिकरण - महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा

सभा पुणे, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पुणे, हिंदुस्तानी प्रचार सभा मुंबई आदि संस्थाओं का

आजीवन सदस्यत्व - विविध महाविद्यालयों में दो दर्जन से अधिक विविध विषयों पर व्याख्यान -

स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाओं में 7 वर्ष का अध्यापन अनुभव.

संप्रति : हिन्दी विभाग प्रमुख, सुशिला शंकरराव गाढ़वे महाविद्यालय, खंडाळा

मोबाइल : 09011444059 ई-मेल : shiraj.shaikh14@gmail.com



प्रियंका चौहान

शिक्षिका एवं शोधार्थी प्रियंका चौहान, पाटकर महाविद्यालय (मुम्बई) में

सहायक प्राध्यापक होने के साथ-साथ सृजन में खास रुचि रखती हैं। आपकी

रचनाएँ देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रहती हैं।

आपका अधिकांश समय अध्ययन, अध्यापन एवं चिंतन में व्यतीत होता है।

हिन्दी के प्रति समर्पण एवं जिज्ञासा ही आपके व्यक्तित्व की पहचान है। महिला

सशक्तिकरण हेतु आपका संजीवा दृष्टिकोण ही आपको इस भीड़ से अलग

पहचान देता है। सम्पर्क - सहायक प्राध्यापक, पाटकर महाविद्यालय,

गोरेगांव, मुम्बई - 400104 ईमेल - priya199c@gmail.com

ज्ञान ज्योति पब्लिकेशंस
दिल्ली

ISBN 978-81-904853-0-2
978-81-904853-0-2 समीक्षा

Rs. 175/-



ISBN : 978-81-904853-0-2

प्रथम संस्करण : 2020

© सुरक्षित

प्रकाशक :

ज्ञान ज्योति पब्लिकेशंस

प्लॉट नंबर 3,

शम्भू पार्क, दिल्ली-110 053

वितरक : मूल्य : ₹ 175/-

आर. के. पब्लिकेशन

मोम सादर, मुम्बई-400 002

फोन 9022 521190 / 9821251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

अध्यक्ष : सुरेश सिंह

सहायक : सुनील निवा

विज्ञान के अध्यापन आयोग edited by Srijal Shukla, Priyanka Chakraborty

विश्व के सभी शोषित मारिचों,
आकाश व्यक्त करते किन्नरों
और
पीड़ित वृद्धों
तथा
उन रचयिताओं को
जिनके साहित्य में इनकी पीड़ा को बाणी मिली
उन्हें
सादर समर्पित....





KHANDALA VIBHAG SHIKSHAN SAMITI'S
SUSHILA SHANKARRAO GADHAVE MAHAVIDYALAYA, KHANDALA

Criterion III

Research, Innovation and Extension

Key Indicator: 3.3-Research Publication and Awards.

3.3.2. Number of Books and Chapter in edited volume/Book Published and Paper published in National/International Conference Proceeding per Teacher during the last five years.

2019-2020

| Sr no | Name of book and chapter in edited volume published /paper in national /international conference proceedings | ISBN No | Name of publisher /journal and level |
|-------|--|------------------------|---|
| 1 | Hindi bhasha our sahyta ko pune ka yogdan, Dr .Shiraj shaikh | ISBN-978-93-86579-73-3 | R.K. Publication Mumbai |
| 2 | Bhasha our anuprayukt bhashavigyan ke adhyatan prayog,Dr .Shiraj shaikh | | Vinay prakashan kanpur |
| 3 | Samarth ramdasanchya vicharanchi shidori ,shrilanka , Dr. patane pratibha | 19 th | Dr .L.V. Taware ,Snehvardhan research institute ,pune ,National and International level |


Principal
Sushila Shankarrao Gadhave Mahavidyalay
Khandala, Tal.Khandala, Dist.Satara

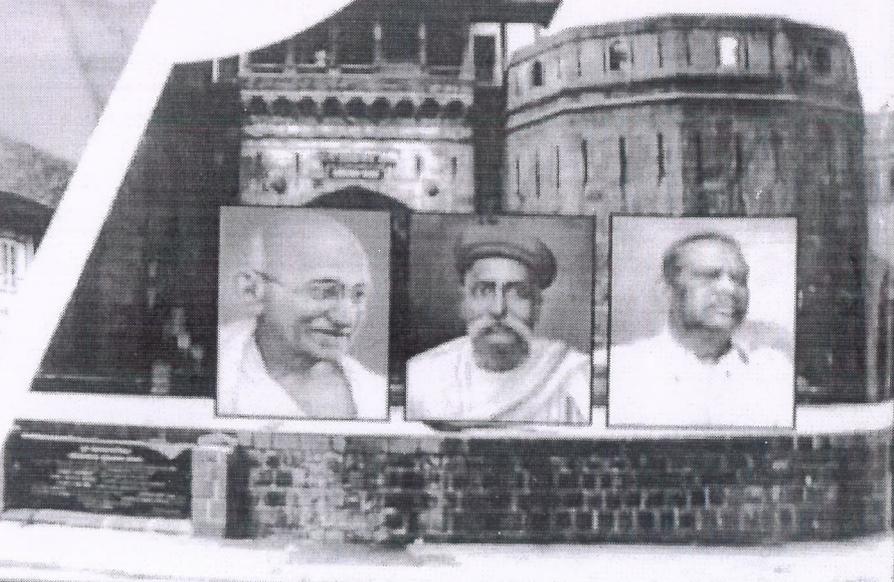
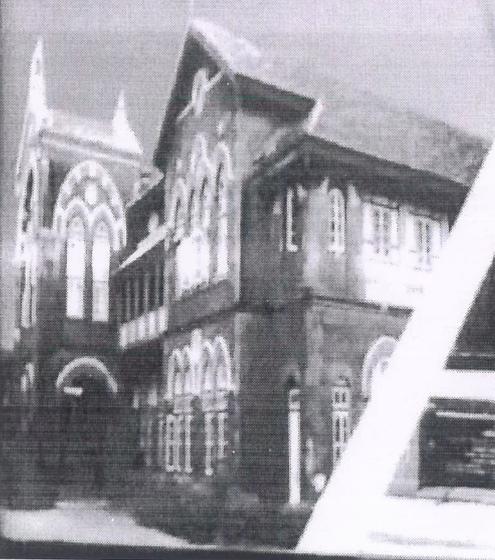


हिन्दी भाषा और साहित्य को पुणे का योगदान

डॉ. सिराज शेख



पुण्यानगरी





ISBN: 978-93-86579-73-3

प्रथम संस्करण : 2019

© डॉ. सिराज शेख

प्रकाशक :

आर.के.पब्लिकेशन

1/12 पारस दुबे सोसायटी, ओवरी पाढा
एस.वी. रोड, दहिसर (पूर्व) मुम्बई-400068

Phone: 9022521190, 9821251190

E-mail: publicationrk@gmail.com

मूल्य : ₹ 550 /-

अक्षर संयोजन : प्रखर कम्प्यूटर

Email- abhishakojha00@gmail.com

आवरण : सुनील निम्बरे

Hindi Bhasha Aur Sahitya Ko Pune Ka Yogdan by Dr. Shiraj Shaikh



2019-20



११

भाषा और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के अध्ययन प्रयोग

प्रो. (डॉ.) वी. एन. भालेराव अभिनंदन ग्रंथ २०१९

संपादक प्रो. (डॉ.) डी. आर. भोसले



विनय प्रकाशन

कानपुर 208021 (उ.प्र.)



संपादक मंडल

| | | |
|----|---------------------------|--------------|
| १. | प्रो. (डॉ.) डी. आर. भोसले | मुख्य संपादक |
| २. | डॉ. रजनी रणपिसे | सह संपादक |
| ३. | डॉ. मिलिंद कांबले | सह संपादक |
| ४. | डॉ. दीपक जाधव | सह संपादक |
| ५. | डॉ. शिराज शेख | सह संपादक |

परामर्श मंडल

| | | |
|----|------------------------------|-----------|
| १. | प्रो. केशव प्रथमवीर | पुणे |
| २. | प्रो. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे | लातूर |
| ३. | प्रो. डॉ. अर्जुन चव्हाण | कोल्हापुर |
| ४. | प्रो. माधव सोनटक्के | औरंगाबाद |
| ५. | प्रो. अंबादास देशमुख | औरंगाबाद |
| ६. | प्रो. सुनिता साखरे | मुंबई |
| ७. | प्रो. रमा नवले | नांदेड |



100

अनुक्रमणिका

| संपादकीय | V |
|---|-----|
| १. हमारा लोकतंत्र और लोकभाषाएँ केशव प्रथमवीर | ११ |
| २. भाषा शिक्षण : स्वरूप एवं प्रक्रिया प्रो. माधव सोनटक्के | २१ |
| ३. भाषाविज्ञान में तरंगात्मक स्वनविज्ञान का योगदान प्रो. अंबादास देशमुख | ३१ |
| ४. देवनागरी लिपि : कथ्यात्मक एवं तथ्यात्मक विमर्श प्रो. डॉ. अर्जुन चव्हाण | ३६ |
| ५. वैश्वीकरण और भाषा डॉ. भीमराव पाटिल | ४६ |
| ६. हिंदी भाषा का व्यावसायिक क्षेत्र प्रो. डॉ. पी. वी. कोटमे | ५० |
| ७. भाषा और साहित्य का अंतःसंबंध प्रो. सुनिता साखरे | ५७ |
| ८. भाषा, समाज और साहित्य का अंतःसंबंध प्रो. विठ्ठल भालेराव | ५९ |
| ९. इक्कीसवीं शती में सूचना प्राद्योगिकी और प्रयोजनमूलक हिंदी प्रो. सौ. रमा प्र. नवले | ६५ |
| १०. महाराष्ट्र की घुमंतू जनजातियों की बोलीभाषा प्रो. डॉ. डी. आर. भोसले | ७२ |
| ११. पारिभाषिक शब्दावली : सिद्धांत और स्वरूप प्रा. डॉ. सुषमा कोंडे | ७५ |
| १२. भाषाविज्ञान के अध्ययन के लाभ एवं उपयोगिता डॉ. मेदिनी अंजनीकर | ८५ |
| १३. व्यर्थ का बोझ ढोती देवनागरी लिपि डॉ. दिपक जाधव | ८९ |
| १४. पुणे के हिंदी काव्यजगत् में प्रतीक, मिथक और बिम्ब विधान का संयोजन एक भाषिक अध्ययन डॉ. शिराज शेख | १०० |
| १५. अनुवाद का भाषावैज्ञानिक पक्ष एवं अनुवाद मूल्यांकन सुजाता विठ्ठल भालेराव | १०८ |



101

पुणे के हिंदी काव्यजगत् में प्रतीक, मिथक और बिम्ब विधान का संयोजन एक भाषिक अध्ययन

डॉ. शिराज शेख

हिंदी विभाग प्रमुख,

राजेंद्र महाविद्यालय, खंडाला, जि. सातारा

प्रस्तावना :

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। साहित्यिक गठबंधन के लिए आवश्यक भाषा में बिम्बों, प्रतीकों और मिथकों आदि तत्वों के उचित प्रयोग की आवश्यकता होती है। भाषा की सरलता, स्पष्टता और भाव गंभीरता ही साहित्य को सशक्त बनाती है। पुणे में निर्मित काव्यजगत् की भाषा का अध्ययन उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में निम्नवत् किया गया है।

१ प्रतीक विधान :

विचार या भाव को संवेदनात्मक रूप देने का कार्य प्रतीकों द्वारा किया जाता है। प्रतीक शब्द का प्रयोग दृश्य या गोचर वस्तु के लिए किया जाता है, जिससे अदृश्य या अगोचर विषय को स्थापित किया जाता है। बृहद् हिंदी कोश में प्रतीक का अर्थ इस प्रकार निरूपित है-“वह दृश्य वस्तु या तथ्य जो किसी अदृश्य वस्तु या तथ्य के प्रायः अनुरूप होने के कारण उसके प्रतिनिधि या प्रतिरूप के रूप में मान ली जाए।”^१

पुणे के कविवर हरिनारायण व्यास, डॉ. दामोदर खड्गे, डॉ. पद्मजा घोरपडे, आसावरी काकडे, डॉ. चेतना राजपूत आदि के काव्य में प्रतीक प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

कविवर हरिनारायण व्यास के काव्य में प्रतीक अनिवार्यता देखने को मिलते हैं। महाभारत और रामायण के पौराणिक पात्र-द्रोपदी (दुःख सहने वाली नारी का प्रतीक), दुशासन (अन्याय और अत्याचार करने वाले व्यक्तित्व का प्रतीक), राम (मानवतावादी शक्ति का प्रतीक), राक्षस (दुश्प्रवृत्तियों का प्रतीक) आदि प्रतीक दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में उदाहरण दृष्टव्य है-

१०० । भाषा और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के अध्ययन प्रयोग



जोतीरा

“अब आदमी का स्पर्श तुममें
फिर से जान डाल देगा
राम मानव है पाशाणी
मानव पत्थर को उर्वरित बनाता है।”^३
यहाँ रामायण का पौराणिक पात्र राम मानवीय चेतना का प्रतीक है।
डॉ. दामोदर खड्गसे के काव्य का निम्न उदाहरण प्रतीक योजना की दृष्टि
से महत्वपूर्ण है। देखिए-

“बरसात में किसी मोड़ पर नदी
किनारों को भरपूर गलबहियाँ देकर/
सन्नाटे में/ रोशनी बोती है/
और उदारता की नई परिभाषा से/
समय का अमृत तिलक करती है/
नदी की हर बूंद/समय का जन्म है।”^३
इसमें नदी परिवर्तनशील जीवन का प्रतीक है, जो हमेशा समय के साथ
चलती है।

इसी संदर्भ में डॉ. पद्मजा घोरपडे के काव्य का निम्नलिखित उदाहरण
दृष्टव्य है-

“टेलिफोन बूथ में/चेहरे पर बिखरी/
पारे-सी बूंदे/कमीज की बाह से/
पोंछते-पोंछते/उंगलियों में फंसी/
शबनमी कणियों को/निहारते-निहारते/
बड़ी उत्सुकता से चला गया/हौले-से रिसीवर में/
जैसा की हवा का झोंका बन बांस बन जगाने जा रहा हो....।”^४
यहाँ टेलिफोन बूथ और रिसीवर में मानवनिर्मित प्रतीक देखे जा सकते
हैं।

आसावरी काकडे की कविताओं में भी अनेक प्रतीक उभरकर सामने



आते हैं। यहाँ निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य है -

“हर तूफान/हमेशा खत्म नहीं करता हमें!/
कभी-कभी वह/पत्तों जैसे/उडाकर/पहुंचाता है वहाँ/
जहाँ पहुंचने के लिए/शायद हमें/कई साल गुजारने पड़ते!”^५

यहाँ तूफान हमारी इच्छाओं की पूर्ति करने वाले पगचिह्न का प्रतीक है, जिसे पाने के लिए मनुष्य हर संभव प्रयास करता रहता है।

“विजय पर्व है दशहरा

बुराई पर अच्छाई की

अंधकार पर रोशनी की।”^६

उपरोक्त काव्य पंक्तियों में दशहरा बुराई पर अच्छाई की विजय प्राप्ति का प्रतीक है।

२. मिथक :

मिथक शब्द अंग्रेजी के ‘मीथ’ तथा ग्रीक शब्द ‘माइथस’ से बना है। इसका अर्थ होता है-मनगढ़ंत कथा अथवा पौराणिक कथा। बृहद हिंदी कोश में मिथक की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-“प्राचीन पुराण कथाओं का तत्व जो नवीन स्थितियों में नए अर्थ का वहन करे।”^७ अर्थात् मिथक का अर्थ है-पुराणकथाओं के माध्यम से नवीनता की खोज करना।

पुणे के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में मिथक का प्रयोग किया है। मिथकीय चेतना से युक्त कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य हैं।

“पुत्र मरणोन्मुख के सामने परित्राण का मरण

समापन के सामने प्रारंभ का मरण

समाप्त होने वाली पीढ़ी के सामने

नई पीढ़ी का मरण यह कितना दारुण है।”^८

कविवर हरिनारायण व्यास की कविता ‘श्रवण के पिता का प्रलाप’ की इन पंक्तियों में राजा दशरथ के बाणों से आहत पुत्र श्रवण की स्थिति तथा श्रवण के पिता के प्रलाप को व्यक्त किया गया है। श्रवण के पिता के प्रलाप के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि यह वेदना केवल श्रवण के पिता की न होकर, संपूर्ण



जोतीरा

मानवता की है। इस कविता का कथाम्रोत पौराणिक है, पर उद्देश्य आधुनिक जीवन की व्याख्या करना रहा है। अतः मिथकीय चेतना से युक्त है। अन्य उदाहरण दृष्टव्य है-

“इन्द्रों ने/जन का जीवन जन चुराया है/
काले धनवाले/जमाघरों से मिलकर/
वर्षा रुकवा दी है/
चुनाव यज्ञ में/
वोटों की आहुतियाँ न पाकर/
झूठे अभावों की/ वर्षा में डुबाया है/
मगर कोई गिरवरधर/नहीं जन्मा।”^{१९}

उपरोक्त पंक्तियों में पुरातन पात्र इन्द्र के माध्यम से आधुनिक जीवन की स्थितियों को व्याख्यायित किया है। अतः यह कविता मिथकीय चेतना से युक्त है। अन्य उदाहरण देखिए -

“छल से छलता है अगर सम्मान को
दूषित करता कैसे भी माँ के मान को
तनय गर यह देखकर भी मौन है
पापी वह सुत नहीं तो फिर कौन है”^{२०}

मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' के खण्डकाव्य 'कैकेयी' की उपरोक्त पंक्तियों में भरत द्वारा माता कैकेयी की जो अवहेलना हुई है, उसके उत्तर में माता के मान, सम्मान के महत्व को यहाँ वर्णित किया गया है। यहाँ ऐतिहासिक कथानक के माध्यम से स्त्री मुक्ति की पुनर्व्याख्या की गई है। अन्य उदाहरण महत्वपूर्ण है-

“सच, मैं अभिमन्यु तो हूँ ही नहीं
फिर चक्रव्यूह की बात
क्योंकर सोचने लगा
क्या मेरा यह सोचना
किसी व्यूह से कम नहीं....”^{२१}



उपरोक्त पंक्तियों में डॉ. दामोदर खड़से ने अभिमन्यु के माध्यम से (मिथक) वर्तमान कालीन युवावर्ग के व्यूह याने अंतर्मर्ण की पडताल करने का प्रयास किया है। अतः यहाँ मिथकीय चेतना दिखाई देती है। अन्य उदाहरण महत्वपूर्ण है-

“आज की नारी नहीं द्रोपदी या गांधारी
वह समर्थ है सभी दृष्टि से करती चिंतन
सही-गलत की परिभाषा जीवन से जुड़ती
कर रही वह नई दृष्टि से युग आवाहन।”^{१२}

उपरोक्त उदाहरण डॉ. कांतिदेवी लोधी की कविता ‘माँ गांधारी’ से लिया है। इसमें महाभारतकालीन दो स्त्री पात्र-गांधारी और द्रोपदी की विवशता और बेबसता को व्यक्त किया गया है। द्रोपदी के कपड़े भरी सभा में उतारे गये। द्रोपदी के सामने विवशता और लाचारी के सिवा अन्य उपाय ही नहीं था। कवयित्री ने मिथक के माध्यम से आज की आत्मनिर्भर नारी की तुलनात्मक आलोचना की है। आज की नारी स्वयंपोषित और आत्मनिर्भर है। अर्थात् पौराणिक कथा के माध्यम से वर्तमान की वस्तुस्थिति को आंकने का सराहनीय कार्य डॉ. कांतिदेवी लोधी ने किया है।

प्रतीक और मिथकों के साथ-साथ बिम्ब विधान की निर्मिति भी पुणे के कवियों ने की है। प्रातिनिधिक तौर पर जिन-जिन साहित्यकारों में बिम्ब-योजना आई है, उनका संक्षेप में विवेचन निम्नलिखित किया गया है।

३. बिम्ब :

बिम्ब शब्द अंग्रेजी के ‘इमेज’ शब्द का हिंदी रूपांतर है। बिम्ब अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करता है। काव्य में बिम्ब चित्रमयी रूप को लेकर रूपक के माध्यम से काव्यानुभूति को सादृश्य तक पहुंचाता है। बिम्ब के लिए कल्पना, भावना और ऐन्द्रीकता इन तीन तत्वों की आवश्यकता होती है। बिम्ब और प्रतीक में असमानता यह है कि बिम्ब मूर्त होता है और प्रतीक संकेतात्मक होता है।

पुणे के कवियों ने विविध प्रकार के बिम्बों का प्रयोग कर काव्यानुभूति को सशक्त बनाया है। निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य है-



जोतीरा

“तरू तन्वंगिनी टहनी ने भी
उठा दिया मुख,
मेघ-अधर-रस-चुंबन
सुख आकांक्षा से।”^{१३}

उपरोक्त पद कविवर हरिनारायण व्यास के 'यक्ष का संदेश' इस कविता संग्रह का है। इसमें प्राकृतिक बिम्ब दिखाई देता है।

“टूटे जल पर थर-थराते हैं
पके बालियों के प्रतिबिम्ब”^{१४}

डॉ. मालती शर्मा के 'निर्वासन की आँधी' के उपरोक्त पंक्ति में दृष्य बिम्ब उद्भूत हुआ है।

“आज दोपहर से ही/
बोझिल हुआ-सा आसमान।
बोझिल हुए आसमान को/सिने से लगा/
दौडने-लौटने झूमने लगा था मतवाला बादल/
जैसे कोई बच्चा हो/
भी-अभी चलना सीख गया/
कोई नन्हा-सा बच्चा।”^{१५}

डॉ. पद्मजा घोरपड़े के 'संवादों के आकाश' की उपरोक्त पंक्ति में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। अतः प्राकृतिक बिम्ब की निर्मिति हुई है।

“सुनो सखी सावन आया
उमड़-घुमड़कर मेघा आए
घनघोर घटा काली घिर आए
खेतन में में हरियाली छाए
देख-देख मन हरशाया।”^{१६}

डॉ. चेतना राजपूत के 'ओस कण' इस कविता संग्रह की उपरोक्त काव्य पंक्ति में प्राकृतिक दृश्य बिम्ब का निर्माण हुआ है।

“मृग-मरीचिका-सी
तुम तो चली जाती हो दूर
मुसाफिरों का लेकिन
हम पर ही अब भरोसा नहीं रहा।”^{१७}

डॉ. स्मिता दात्ये का कविता संग्रह ‘सूरज का उजला पोस्टर’ की प्रस्तुत काव्य पंक्ति में भी दृश्य बिम्ब का निर्माण हुआ है।

“हमारे दरमियान
सिर्फ
कोहरा ही तो है
देखो न....”^{१८}

आसावरी काकड़े द्वारा लिखित ‘इसीलिए शायद’ की उपरोक्त पंक्ति में कोहरे का दृश्य हमारे सामने उपस्थित होता है। अतः यहाँ भी दृश्य बिम्ब की निर्मिति हुई है।

इस प्रकार पुणे के कवियों ने अपनी रचनाओं में बिम्बों का उचित प्रयोग किया है।

निष्कर्ष :

पुणे के कवियों ने अपनी कविताओं में प्रतीक, बिम्ब और मिथकों का उचित मात्रा में प्रयोग किया है। यह उनकी अनोखी प्रतीपादन शैली कही जा सकती है। मराठी प्रदेश पुणे में रहकर कुछ हिंदी भाषी कवि और कवयित्रियों ने अपने अपने क्षेत्र विशेष जैसे कश्मीरी, सिंधी, पंजाबी आदि की मिठास छोड़ी है तो कहीं मराठी भाषी कवि और कवयित्रियों ने मराठीपन का प्रभाव छोड़ा है। संक्षेप में इन पुणे के काव्य जगत में भिन्न-भिन्न भाषियों द्वारा हिंदी का विकास हुआ है।

संदर्भ :

१. बृहद हिंदी कोश - कालिका प्रसाद, पृ. ७३२
२. यक्ष का संदेश - हरिनारायण व्यास, पृ. ४६
३. सन्नाटे में रोषनी - डॉ. दामोदर खडसे, पृ. १०

१०६ । भाषा और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के अध्ययन प्रयोग



१७. सिंधू संस्कृती, हिंदू संस्कृती आणि
बौद्ध संस्कृती : काही निरीक्षणे
- डॉ. शैलेश त्रिभुवन/१९

१८. समर्थ रामदासांच्या विचारांची शिदोरी
- डॉ. प्रतिभा पाटणे /१०६
- गौरव भोसले/१११

१९. महाराष्ट्राची खाद्यसंस्कृती
- प्रा. चित्रलेखा देवकर /११५
गृहव्यवस्थापनाची तत्वे

२०. भारतीय संस्कृतीतील
- डॉ. लक्ष्मी झमन/१२१
मोरिशस

२१. शब्दों के मसीहा- विष्णु प्रभाकर
- देवी नागरानी/१२४
अमेरिका

२३. Religious & Management
Culture Similar between
- Prof. Vijaya Sukale/129
Indian & Sri lankan

२४. A. P. J. Abdul Kalam
- Druva Deshpande/135
२५. Yoga Therapy & Physiotherapy:
- Dr. Aboli Gore/138
an Overview

२६. Indian Culture & Heritage
- Dr. Madhavi Pawar/144
२७. ISO 9001: 2015 Quality
- Dr. Sunil Manjarekar/149
Management System
Dubai

२८. Contribution of
- Dr. Radha Mangeshkar/154
Sri Lankan Religious Culture
at National and International Levels

२९. Non-Religious Function of
- Dr. Rewant Singh/159
Buddhist Monasteries of Ancient
Sri Lanka
India and Sri Lanka

३०. Cultural Links between
- Dr. Lalsinh Tawre/164
India and Sri Lanka



105

समर्थ रामदासांच्या विचारांची शिदोरी

- डॉ. प्रतिभा प्रदीप पाटणे

भ्रमणभाष : ८८८८११०६६०

भौतिक प्रगती, आधुनिक राहणीमान, ज्ञानविज्ञानाचा विस्फोट झालेल्या आजच्या संगणकाच्या युगात माणसाची जगण्याविषयीची संकल्पना बदलत चालली आहे. चंगळवादी भोगवृत्तीमुळे माणूस आपले स्वास्थ्य समाधान गमावत चाललेला दिसतो. अशा या अस्थिर मनोवृत्तीच्या काळात माणसाला प्रोत्साहन देऊन प्रेरक व कार्यप्रवण करणारे समर्थचे वाङ्मय आहे.

माणसाला निष्क्रियतेपासून वाचवून त्याला जीवनात सर्वांगीण विकास साधण्यास प्रवृत्त करण्याचे सामर्थ्य समर्थांच्या लेखणीत आहे. त्यांच्या लेखणीत आहे. त्यांच्या लेखणीने वैयक्तिक विकासाच्या जोडीने समाज, राष्ट्र, वैश्विक एकात्मता यांच्या उन्नतीचा ध्यास घेतलेला दिसतो.

'शहाणे करून सोडावे' सकळ जन ।' अशी त्यांची लोकशिक्षकाची भूमिका असल्याने त्यांनी ज्ञानोपासनेवर भर दिला. समर्थांनी लोकांना केलेल्या उपदेशाविषयी न.र.फाटक म्हणतात "धर्मस्थापना, भक्तिमार्गाचा प्रसार, देवांच्या वैभवाचे संवर्धन हे समर्थांचे ध्येय असल्यामुळे, त्याचा सिद्धर्थ लोकांची संघटना करणे त्यांस अवश्य वाटत होते. लोकांमध्ये भक्तिविषयक जूट व जागृती करावयाची म्हटल्यास, एकाच ठिकाणी कायमचा डेरा टोकून राहणे अयोग्य होय, असे समर्थांच्या उपदेशाचे आणखी एक अंग आहे" माणसाची जीवनविषयक कर्तव्य आणि जीवनात उद्भवणाऱ्या प्रश्नांचा परामर्श त्यांनी परमार्थांच्या उपदेशातून केला त्यासाठी लेखन, कीर्तन, प्रवचन, संवाद अशी माध्यमे वापरली. आपल्या शिष्यांनीही शिक्षकाची भूमिका घेऊन ज्ञानप्रसार करावा अशी समर्थांची भावना होती, सामान्य लोकांच्या जीवनातील प्रपंचाचे महत्त्व जाणून प्रपंचाच्या आधारे परमार्थ कसा साध्य होईल याची दृष्टी दिली. आजचा समाज व समर्थ काळातील समाजातील मूलतत्त्वे भिन्न असली तरी कोणत्या प्रसंगी कसे वागावे, कसे रहावे हा समर्थांचा उपदेश आजच्या लोकांनाही मार्गदर्शक

ठरणारा आहे. आजच्या स्पर्धात्मक युगात रामदासांचे जीवन व कर्तृत्व दिपस्तंभाप्रमाणे मार्ग दाखविणारे ठरेल यात शंकाच नाही. त्यांच्या शिकवणुकीचा अभ्यास करताना जीवनविषयी तत्त्वज्ञान, जीवनविषयक मूल्ये, व्यावहारिक उपदेश, अध्यात्म या सर्वांचा विचार ध्यानात घ्यावा लागतो. त्यांच्या शिकवणुकीचा आशय विवेकयुक्त प्रपंच व वैरागयुक्त परमार्थ असा होता. समर्थांनी आपल्या जीवनातील ज्ञानाचे महत्त्व ओळखून त्याचे आयुष्यातील महत्त्व दाखवून दिले. आयुष्यात जमवलेली ज्ञानाची शिदोरी कधी वाया जात नाही असा विचार मांडणाऱ्या समर्थांच्या ज्ञानाच्या संकल्पनेविषयी न.र.फाटक म्हणतात, 'देव कोण, सत्यस्वरूप म्हणजे काय, नित्य कोणते, अनित्य कोणते, या प्रश्नांचे बिनचूक उत्तर म्हणजे ज्ञान. यांच्या प्रभावाने दृश्य प्रकृती, पंचभूतांची सृष्टी, द्वैतभावना यांचा निरास होतो. हे ज्ञान मानवबुद्धीला अगोचर असून तर्क तेथे पोचत नाही. चारी वाणींच्या ते पलीकडे असते. दृश्य नाही, भान किंवा भास नाही, जेथे जाणीव अर्थात शब्दपांडित्य हे अज्ञान ठरते, त्याला विमल शुद्ध स्वरूपज्ञान म्हणतात' याचविषयी संदर्भात वासुदेव गोमटे समर्थांच्या ज्ञानाविषयी आपले मत मांडताना म्हणतात, 'ज्ञानाचे महत्त्व आणि त्याचे आयुष्यातील स्थान याचे वास्तव चित्रण समर्थांनी केले आहे. प्रत्यक्ष परमेश्वराने ज्ञानाची महती गायिलेली आहे असे समर्थ रामदासांनी ठामपणे प्रतिपादन केले आहे. आयुष्यात ज्ञान संपादन केले नसेल तर सर्व प्रकारचे कष्ट, सर्व प्रकारची कामे वाया जातात. एवढेच नव्हे तर त्याची तुलना दगड, पशू यांच्याबरोबर केलेली आढळते.'"

लोकांमध्ये ज्ञानाच्या मदतीने आत्मविश्वास निर्माण करण्यासाठी 'यत्न देव जाणावा' असा आश्वासक मंत्र देणाऱ्या समर्थांनी शिक्षणशास्त्राचे महत्त्व ओळखले होते. सर्वांगीण प्रगती साधण्यासाठी शिस्त, नियमित अभ्यास सराव, उत्कृष्ट प्रशासन, नीतीविषयी विचार, शारीरिक आरोग्य व शिक्षणावर भर दिला. या सर्व गोष्टींचा आजही आपणास बहुमोल उपयोग होईल असे समर्थांचे विचार आहेत. आज भेडसावणाऱ्या अनेक समस्यांपैकी लोकसंख्या शिक्षणाची गरज समर्थांनी तत्कालीन समाजासमोर मांडलेली आढळते. त्याकाळातही समर्थांनी लोकसंख्या शिक्षणातील संबंध व त्याविषयीचे तपशील याविषयी सख्खी शिकवणुका व्यक्त केलेले आहेत.

स्वधर्मस्थापना व स्वराज्यस्थापनेसाठी रामदासांनी जन्मलेल्या राजकारणाचा उपदेश केला आहे. संप्रदायाच्या लक्षणांमध्ये तसेच वैभवाधीनतेने चतुःसूत्रीत त्यांनी फक्त राजकारणावर उपदेश केला नाही तर राजकारणाचा उपदेशाबरोबरच शिष्य व महतांना निरनिराळ्या प्रकारे राजकारणाचे महत्त्व दाखवून दिले. आध्यात्मिक विचारातून त्यांनी ऐहिक जीवनाचा विचार केला आहे तो



राजकारणावर दासबोधाला १९ व्या शतकातील ९ व्या समासात त्यांनी राजसयुक्त व तामसयुक्त राजकारणाचा स्वीकार करताना म्हटले आहे, राजाने अनेक लोक कामाला लावावीत, त्यांना नियमित उपासनेला लावावे, यात जो चोर, अप्रामाणिक आहे त्यालाही जवळ करून भांडाराच्या किल्ल्या त्याला द्याव्या; पंतु त्याच्यावर सूक्ष्म लक्ष ठेवावे असा वास्तवाचा रोखटोख वेध घेणाऱ्या समर्थाचा विचार आज लोकांना उपयुक्त असा आहे.

‘उत्कट भव्य तितकें घ्यावे । मळमळीत अवघे टाकावे ।’ अशी उक्ती सांगणाऱ्या समर्थांनी समाज्याच्या कल्याणसाठी परमार्थ आणि ऐहिकाची चिंता वाहिली त्यासाठी त्यांनी प्रपंच व परमार्थाचा एकत्रित समन्वय सांगितला. माणसाच्या जीवनात प्रारब्धापेक्षाही प्रयत्नवाद मोठा आहे हे समजावून दिले. आळशी, प्रयत्नहीन माणसे तसेच समाजाचा तिटकारा करणारे समर्थ केवळ भक्तिमार्गी संत नव्हते तर महाराष्ट्र धर्माचे प्रणेते, युगधर्मप्रवर्तक, राजकारणी, संतत्व लाभलेले संत होते. छत्रपती श्रीशिवाजी महाराज व समर्थांचे ध्येय महाराष्ट्र धर्म प्रसाराचे होते. धर्मस्थापना व स्वराज्यस्थापनेचे ध्येय बाळगून त्यांनी समाजातील लोकांमध्ये राष्ट्रीयत्वाची व धर्माभिमानाची भावना उत्पन्न केली, लोकांची मने राजकारणाकडे प्रवृत्त केली. सुलतानी राजवटीला विरोध करून ‘मराठा तितुका मेळवावा । महाराष्ट्र धर्म वाढवावा ।’ असा उपदेश करणाऱ्या समर्थांनी आपल्या मंहात्वाच्या अंगी कोणते गुण असावे त्याने काय केले पाहिजे याचेही वर्णन केले आहे. या वर्णनातून आजच्या सार्वजनिक कार्यकर्त्यांच्या अंगी कोणते गुण असावे याचे विवेचन आढळते. अर्थात आजचे राजकारण व या राजकारणाचा अर्थ समर्थ विचारामध्ये नसून त्यांच्या विचारात आत्मोद्धाराची व जगत उद्धाराची पोटतिडीक दिसून येते. आजच्या विज्ञानयुगात विवेकवादाचा अभाव जाणवतो आहे. समस्त समाज जीवन चंगळवादात अडकून पडलेले दिसते. यातून बाहेर पडण्यासाठी समर्थ विचारांची मदत उपयोगी पडणारी आहे. य.दि.पेंढारकर समर्थ साहित्याविषयी म्हणतात, ‘रामदासांचे कवित्व आणि रामदासांचे चरित्र यात अभेदपणा आहे. त्यांनी जे अनुभवले आणि जे आचरले तेच त्यांच्या मुखातून प्रगट झाले आहे. ते सारे मनःपूर्वक जो वागीन त्याला त्यांच्या अनुभव समृद्धीची आणि ज्ञानसमृद्धीची अथांगता जाणवू शिवाय राहणार नाही. व्यवहार, समाजकारण वेदान्त आणि राजकारण यांविषयी त्यांची वचने रोखटोक आहेत. कोणत्याही पेशाचा मनुष्य असो त्याला त्यांच्या वाङ्मय हे आपल्यासाठीच आहे असे वाटण्याजोगे काही ना काही आढळलेलच इतकी त्याची विशालता आहे.’^४ समर्थ वाङ्मयात दासबोधाला सर्वश्रेष्ठ असे महत्त्व आहे. समस्त महाराष्ट्रीयाना केलेला बोध, शिष्यांना केलेला बोध म्हणजे दासबोध. हा रामदासी संप्रदाय व

विचाराविषयी वासुदेव गोगटे म्हणतात, ‘मराठी सारस्वतात ज्ञानेश्वरी, नाथभागवत, तुकारामची गाथा यांना जे सामान्य स्थान मिळाले आहे तेच स्थान दासबोधालाही मिळाले आहे. दासबोध हा रामदासांचे कार्य, त्यांचे तत्त्वज्ञान याबरोबरच मानवी जीवनातील मूलभूत समस्या यांच्याशी निगडित आहे. समर्थांनी प्रपंच आणि परमार्थ यांतील समन्वय या ग्रंथाद्वारे स्पष्ट करून सांगितलाच पण त्याबरोबर तत्कालीन परिस्थितीत आवश्यक असे समन्वयवादी तत्त्वज्ञान लोकांच्या पुढे प्रभावीपणे मांडले हे त्यांचे वेगळेपण होते.’^५ दासबोधाला गुरु-शिष्य संवादात अध्यात्माचे निरूपण प्रपंच, व्यवहार, राजकारण, परमार्थ अशा विविध विषयांवर विवेचन करून तत्कालीन परिस्थितीत गरजेचे असणारे समन्वयवादी तत्त्वज्ञान मांडलेले दिसते.

आजच्या मराठी माणसाला प्रोत्साहित करण्याचे सामर्थ्य दासबोधाने दिसते. विशेषतः दासबोधाला ‘लघुबोध’ या समासातील छत्रपती शिवाजी महाराजांना केलेला उपदेश, सभाजीराजांना पत्ररूपाने केलेले उपदेश नव्या पिढीने, लोकनेत्यांनी घ्यायला हवा आजचा समाज हा राजकारण व समाजकारणांने ग्रासलेला आहे. अशावेळी समर्थ रामदासांसारख्या मंहात्वाची विशेष गरज जाणवते. जो समाजाला सर्वांगीण उन्नती व राष्ट्रउन्नतीची दिशा दाखवेल. ‘धीर धरा हडबडू गडबडू नका’ असा सल्ला देणाऱ्या समर्थांची शिकवण कालबाह्य नाही त्यांच्या संपूर्ण साहित्यातून मांडलेली राजकीय आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक मूल्ये आजच्या पिढीला उपयुक्त अशीच आहेत. आपले वैयक्तिक जीवन घडवताना सामाजिक आचरण कसे असावे, लोकनेत्यांचे कोणते गुण असावेत याचे मार्गदर्शन समाज संघटनेत उपयोगी ठरते. आज दुसऱ्याने कसे वागावे यावरच मनुष्य जास्त विचार करतो. त्यामुळे अधिकाधिक समस्या निर्माण होताना दिसतात.

‘जो दुसऱ्यावर विश्वासला, त्याचा कार्यभार बुडाला । जो आपणासी कष्टत गेला तोची भला श्रीराम । लोकशक्तीचे एकत्रीकरण करून लोकसंघटन करताना लोकांमध्ये विश्वास निर्माण करणे महत्त्वाचे असते. त्याचप्रमाणे लोकशक्तीचा विकास करण्यासाठी परोपकारी वृत्ती अंगी बाळगली पाहिजे. ज्याला समाजात काही उभे करायचे आहे. त्याला सर्व प्रकारच्या लोकांशी संबंध स्थापना लागतात. अनेक वृत्तीप्रवृत्तीच्या माणसांशी संपर्क ठेवावे लागतात. अशाप्रमाणे काय साधायचे आहे. यातील वास्तव ओळखून कार्यभार करावा लागतो.’

आज संस्कृती नष्ट होण्याची भीती, माणसाचे आशाशून्य जगणे, मीपणाची भावना, कामक्रोधादी षड्रूप या साऱ्यामुळे मानवी जीवन उद्वेग होताना दिसते अशावेळी समर्थरूपी विचारामधून जी प्रकाशकिरणे दिपत आहेत त्यांची मार्गदर्शक ठरणारी आहेत. त्यांची सोबत आपण स्वीकारून जीवनरूपी प्रवासाची



दिशा ठरवली पाहिजे. वाद, भेदभाव विसरून लोकशक्ती विकसित केली तर समर्थांच्या संकल्पनेतील रामराज्य अवतरण्यास अवधी लागणार नाही. देश काळ, प्रसंग, वर्तमान पारखून वागण्याचा शहाणपणा माणसात यावा लागतो, राजकीय जागरूकता, तर्कशुद्ध व बुद्धिवादी विचार, प्रपंचविज्ञानाची संगत स्वीकारून राष्ट्रोन्नतीचा प्रयत्न करताना बलोपासनेचे महत्त्वसमर्थानी समाजातील तरुण पिढीपर्यंत पोचविले. आजच्या फास्टफूड जमान्यात बलोपासनेची शिकवण समाजाला आवश्यक असलेली दिसते. आज ३३% आरक्षणासाठी स्त्रीला केवढे झगडावे लागते हे पाहिल्यावर समर्थांचे स्त्रीविषयक विचार प्रगतीपोषक असल्याचे दिसून येते. समर्थांनी लोकापवादास न भिता आपल्या संप्रदायात स्त्रियांचा समावेश करून स्त्रीवर्गात जागृती आणण्यासाठी स्त्रियांनी अनुग्रह दिला होता.

समारोप : समाजात गुणात्मक दृष्टीने आत्मविश्वास वाढविण्यासाठी प्रयत्नवाद, अध्यात्म, भक्तीची सांगड घालवणाऱ्या समर्थविचारांची शिदोरी आजच्या काळातही समाजाच्या उन्नतीसाठी, प्रगतीसाठी प्रेरणादायी ठरणारी आहे.

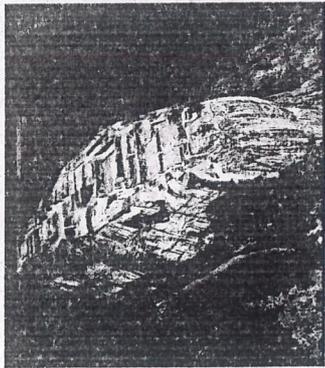
ॐ



संदर्भ सूची :

- १) फाटक न.र. रामदास: वाङ्मय आणि कार्य, मुंबई, पृ. ३०२
- २) फाटक न.र., तत्रैव, पृ. १२०
- ३) गोगटे वासुदेव वामन, शिक्षणतज्ज्ञ समर्थ रामदास, पुणे, पृ. २२
- ४) पेंढारकर य.दि. समर्थ रामदास : एक अभ्यास, पुणे, पृ. २२
- ५) गोगटे वासुदेव वामन, उनि, पृ. १७

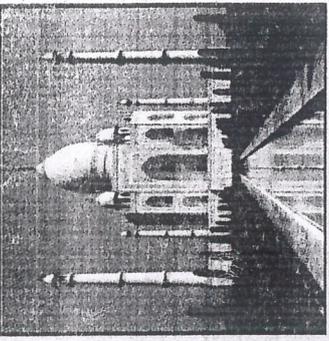




Sri Lanka

19th

International Interdisciplinary Conference
Theme:
' Contribution of Indian and Sri Lankan Culture
at
National & International Levels '



India



Center for Heritage Studies,
University of Kelaniya, Sri Lanka

in collaboration with



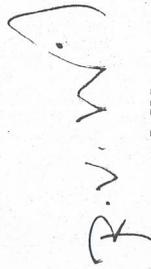
And Snehavardhan Research Institute,
Pune, India

Certificate

This is to certify that **डॉ. प्रतिभा पाटणे** has participated
and presented the Research Paper on
' **समर्थ रामदासांच्या विचारांची शिदोरी** '
In the International Interdisciplinary Conference on
Tuesday, 12th November 2019 at Colombo, Sri Lanka.


Prof. Anura Manatunga
Director

Centre for Heritage Studies
University of Kelaniya, Sri Lanka


R.V.W.S.

Dr. Rewant Vikram Singh
Director

Swami Vivekananda Cultural Centre
Colombo, Sri Lanka





Dr. Snehal Tawre
President
Snehavardhan Research Institute
Pune, India



KHANDALA VIBHAG SHIKSHAN SAMITI'S
SUSHILA SHANKARRAO GADHAVE MAHAVIDYALAYA, KHANDALA

Criterion III

Research, Innovation and Extension

Key Indicator: 3.3-Research Publication and Awards.

3.3.2. Number of Books and Chapter in edited volume/Book Published and Paper published in National/International Conference Proceeding per Teacher during the last five years.

2018-2019

| Sr no | Name of book and chapter in edited volume published /paper in national /international conference proceedings | ISBN No | Name of publisher /journal and level |
|-------|--|--------------------------|---|
| 1 | Sanskriti va sahityacha anubandh , Dr. patane pratibha | ISBN-978-93- 87628-15 | Dr .L.V Taware Snehvardhan prakashan ,pune International |


Principal
Sushila Shankarrao Gadhave Mahavidyalay
Khandala, Tal. Khandala, Dist. Satara



संस्कृती क्रम

- Curtain Raiser - Dr. Snehal Tawre /7
- १) आपली वाचन संस्कृती - डॉ. नीला पांढरे /९
- २) स्त्री हीच संस्कृती संवर्धक - डॉ. स्नेहल तावरे /१६
- ३) मूल्य संस्कृती जोपासणारी - डॉ. प्रभाकर जोशी /२१
- महात्मा गांधी यांची 'एकादश' जागतिक जीवनमूल्ये
- ४) कन्नड लोकगीते : एक संस्कृती दर्शन - डॉ. विजया तेलंग /२७
- ५) भारतीय संस्कृतीतील ॐ कार प्रतीक - डॉ. अपर्णा साबणे /३२
- ६) भारतीय कृषी संस्कृती दर्शन - श्री. प्रदीप पाटणे /३८
- ७) लोकपरंपरेतील भाऊ - डॉ. सुलक्षणा कुलकर्णी /४१
- बहिणीचे नाते
- ८) वाचन संस्कृती - डॉ. लता पवार /४७
- ९) भारतीय संस्कृतीचा जागतिक प्रभाव - डॉ. शीला गाढे /५४
- १०) मॉरिशसमधील लेखनसंस्कृती - प्रा. मधुमती कुंजल /५९
- मॉरिशस
- ११) लोकसंस्कृती आणि श्रमसंस्कृती - डॉ. सतीश शिरसाठ /६४
- यांचे स्वरूप
- १२) आपली भारतीय संस्कृती - प्रा. मोहिनी कसबेकर /६८
- १३) पर्यावरण आणि आदिवासी संस्कृती - डॉ. पुष्पा गावीत /७३
- १४) महाराष्ट्रीयन संस्कृती : - डॉ. केतकी भोसले /७८
- दैवते, लोकरंजन परंपरा
- १५) संस्कृती व साहित्याचा अनुबंध - डॉ. प्रतिभा पाटणे /८५
- १६) लोककला गीतांतील मराठी संस्कृती - डॉ. पौर्णिमा बोडके /९०
- १७) भारतीय संस्कृती - पूनम यादव /९५
- १८) बंजारा समाज की संस्कृति - श्री. विजयराव शेळके /१०२
- के विविध आयाम
- १९) लोकसाहित्य में प्रतिबिंबित - डॉ. भारती शेळके /१०९
- लोक संस्कृति के दर्शन

- १० Snehavardhan Prakashan : No. 1220
- १० 'The Aspects of Various Cultures at National & International Level' (Reference Book)
- १० **Publisher and Printer**
Dr. L. V. Tawre
Snehavardhan, 863 Sadashiv Peth,
Behind Mahatma Phule Sabhagruh,
Pune - 411030. India
Tel. : (020) 24472549 / 244336961
Mobil : 9423643131 / 9075081888
Email : snehaltawre@gmail.com
- १० © S.R.I.
- १० **First Edition** : 11th June 2018
12th International Interdisciplinary Conference, Bali
- १० **Cover** : Santosh Ghongade
- १० **Type Setting** : S. S. Graphics, Pune.
- १० **Printed at** : Smita Printers, Pune
- १० ISBN 978-93-87628-15-1
- १० **No. of Pages** : 200
- १० **Price** : ₹ 200/-
\$ 4

संस्कृती संवर्धन हेच कार्यक्षेत्र असणाऱ्या
आणि
त्यातून पृथ्वीवर नंदनवन निर्माण
करणाऱ्या सर्वांना

सस्नेह अर्पण...

डॉ. स्नेहल तावरे



संस्कृती व साहित्याचा अनुबंध

डा. प्रतिभा प्रदीप पाटणे

भ्रमणभाष : ८८८८१०६६०

aabha.patne@gmail.com

मानवी जाण्यातील अत्यंत महत्वाचा घटक म्हणून आपण संस्कृतीकडे पाहतो. संस्कृतीच्या संस्कारामुळे माणसाचे जीवन अधिकाधिक प्रगल्भ होते. संस्कृती हा शब्द अनेक अर्थछटा असणारा व्यापक असा आहे. कृषी, व्यवसाय, शिक्षण, अर्थ, कला, रितिरिवाज, धार्मिक श्रद्धा, शकुन-अपशकुन, सण, परंपरा अशा अनेक क्षेत्रांशी संस्कृतीचा संबंध असलेला दिसतो. माणसाचे ज्ञान, त्याच्या समजूती, त्याची वर्तणूक या साऱ्यांचा परिपाक संस्कृतीतून प्रतीत होतो. संस्कृती या शब्दाचा अर्थ सांगत असताना विष्णू प्रभाकर आपल्या 'संस्कृती क्या है?' या पुस्तकामध्ये संस्कृतीचा संबंध संस्कार व सृजन प्रतिभा या दोन घटकांच्या अंगाने स्पष्ट केला आहे. संस्कृती म्हणजे विकास अशी संस्कृतीची ओळख या ग्रंथातून लेखकाने केली आहे.

संस्कृतीचा आशय व तिची रूपे

निसर्ग व मनुष्य हे विश्वाचे दोन महत्त्वाचे घटक आहेत. निसर्गाशी एकरूप होऊन आपल्या जीवनात उत्कर्ष घडविण्याचा प्रयत्न करत मनुष्य कालक्रमण करत असतो. या काळात तो निसर्गातील भौतिक पदार्थांवर जसा संस्कार करतो तसेच स्वतःचे शरीर, मन, बुद्धीवरही संस्कार करतो. स्वतःमध्ये बदल घडवत असतो. संस्कृतीचे बदल हे कधी डोळ्यांना जाणवणारे असतात तर काही बदल हे अंतर्मनात जाणवणारे असतात. समाज जीवनात जगताना काही धार्मिक श्रद्धा, परंपरा, शकुन, अपशकुन सण या समाजाने ठरवून एका पिढीकडून दुसऱ्या पिढीकडे संक्रमित होत असतात. इरावती कर्वे संस्कृतीचे विश्लेषण करताना म्हणतात, "मनुष्य समाजाची डोळ्यांना दिसणारी भौतिक वास्तुरूप निर्मिती व डोळ्यांना न दिसणारी पण विचारांना आकलन होणारी मनोमय सृष्टी म्हणजे संस्कृती."





समाजाचा ही आविभाज्य भाग असते. माणसाचे सांस्कृतिक जीवन म्हणजेच समाज असतो. मानवी जगण्यात वाचनसंस्कृतीचा वाटा मोलाचा आहे. आपली जडणघडण परिपूर्ण होण्याच्या दृष्टीने साहित्य, भाषा, कला, परंपरा या साऱ्यांचा सहभाग असतो.

साहित्य आणि संस्कृतीचा सहसंबंध साहित्यकृती वाचकाशी संवाद साधत असते. या संवादाच्या माध्यमातून वाचकाला जीवनाविषयक जाणीव करून देत असते. या जाणिवेतून सुखद व दुःखद अशा दोन्हींचा अनुभव घेत वाचक प्रगल्भ होत असतो. या अनुभवातून व्यक्तिगत तसेच सामाजिक जगण्याशी संबंधित घटनांमधून नैतिक मूल्ये मनावर ठसत असतात. लेखकाची त्याच्या लेखणीमधून मांडलेली मूल्ये त्याच्या वैयक्तिक जीवनात जेवढी महत्त्वाची असतात तेवढीच सामाजिक जीवनातही असतात. लेखकाने मांडलेल्या कलाकृतीतून त्याच्या संस्काराची छटा वाचकांच्या मनावर ठसत असते. आपली वैयक्तिक मूल्ये समकालीन विचारांशी सांगड घालून कलात्मतेने समाज विख्यात रजवितो त्याची कलाकृती व्यापक ठरत असते. मराठी वाचनसंस्कृती

आजच्या बदललेल्या वाचनसंस्कृतीत पुस्तकाबरोबरच टी.व्ही., इंटरनेट, फेसबुक, व्हॉट्स अॅप अशा आधुनिक प्रसारमाध्यमांचा समावेश झाल्याने वाचन संस्कृतीवर परिणाम झालेला दिसतो. पूर्वी इतर माध्यमांच्या अभावामुळे घरात पुस्तकाचा संग्रह करून वाचन केले जात असे. पुस्तक वाचल्यावर आपआपसात चर्चा, वादविवाद घडत असत. हे सारेच चित्र बदललेले असले तरी वाचनामधून मिळणारा आनंद, समाधान इतर कोणत्याही करमणुकीच्या साधनांमधून मिळत नाही. महाराष्ट्राच्या इतिहासात वाचनसंस्कृती, लेखक, लेखनाची प्राचीन परंपरा व इतिहास आहे. प्राचीन काळात महाराष्ट्राला 'दंडकारण्य' असे संबोधले जात असे. आर्य व द्रविड या वंशांतील लोकांमध्ये संघर्ष होऊन दोन्ही वंशांत सांस्कृतिक समन्वय झाला. आजच्या महाराष्ट्राचे भौगोलिक दृष्टीने विविध भूयुद्धे असलेले दिसतात. या भौगोलिकतेचा प्रभाव साहित्य संस्कृतीवर उमटलेला दिसतो. पश्चिम महाराष्ट्र, खानदेश, कोकण, मराठवाडा, विदर्भ असे प्रमुख भूयुद्धे महाराष्ट्रात असून त्यांची प्रत्येकाची खाद्यसंस्कृती, प्रथा, सण, रितीरिवाज, धार्मिक श्रद्धा या साऱ्यांचा प्रभाव जनमानसांच्या जगण्यावर उमटलेला आढळतो. वेशभूषा, हवामान, खानपान, नैविधी, चालीरिती या सर्वांचे घटकामध्ये

आढळते. ही माणसाची संस्कृती साहित्यातही उमटताना दिसते. नापीक शैलीच्या चक्रात अडकलेल्या शेतकऱ्याची विदारक कहाणी 'बरोमास' मध्ये सदानंद देशमुख यांनी रेखाटली आहे. रोगसई, गारपीट, आत्महत्या याभोवती शेतकरी कुटुंबातील युवकाच्या मनाची घालमेल ग्रामीण वास्तवतेचे उलगाडत जाते. त्यावेळी कादंबरीच्या नायकाची मनाची उलघाल आपल्या हृदयापर्यंत पोहचते. शहरी समाजजीवन व ग्रामीण समाजजीवनातील तफावत एकनाथ व अलकाच्या रूपाने 'बरोमास' मधून व्यक्त होताना सुशिक्षित बेरोजगाराची शोकांतिका वास्तव रूपाने मनाला चटक देते. अलका आपल्या संसारात आई न होण्याचा निश्चय नव्याजवळ बोलून दाखविते. घरच्या भयानक परिस्थितीत जन्माचे असे तिला वाटत नाही. पकास गावात आपले मूल उकिरड्यावर खेळतेय ही कल्पनाच तिला सहन होत नाही. निसर्गाच्या कोपाने सारा शेतकरी वर्ग हवालदिल झालेला आहे, पावसाची वाट पाहतापाहता त्याच्या यशाला कोरड पडली आहे. कोरडी जमीन, दुबार पेरणी, नवे कर्ज, नवे विधाने, याच्या धास्तीने गावकरी कासावीस झालेला आहे आपला शेतकरी अजूनही निसर्गावर किती अवलंबून आहे. याचे भयानक वर्णन लेखकाने केल्याने शेतीवर आधारित ग्रामीण जीवन व त्यांच्या संस्कृतीची ओळख होते. नागापंचमीच्या सणाला गावात झाडाला झोके बांधून बायका मध्यरात्रीपर्यंत गाणी गात फेर धरून नाचत आहेत तर भामबाई सकरूबाचा नवस फेडायला लागत काळ्या गुंजा, झेंडूची फुले जमा करत आहे. नवस फेडण्यासाठी गल्लीतल्या साऱ्या बायका जमा होऊन सकरूबाचे गाणे म्हणत फेर धरून नाचत घुमत होत्या. कादंबरीत प्राणिपक्षी आणि माणसाचे सुंदर नाते लेखकाने चितारले आहे. परंपरेचे गारूड आजही ग्रामीण संस्कृतीत अनुभविण्यास मिळते. अलका साडी नेसल्यावर कधी डोक्यावर पदर घेत नसे. शेवताबाई एकनाथला म्हणायची, 'खिळा ठोक बरं तुह्या बायकोच्या कपाळात. तिच्या डोक्यावर पदरच राहत नाई. गुतवून तरी ठेवत जाईल खिळ्यात.' ग्रामीण भागातील परंपरेचे दर्शन घडवत आजच्या शिक्षणाची अवहेलना रेखाटताना ग्रामीण युवकाची कुचंबणा एकनाथच्या रूपाने 'बरोमास' मध्ये दिसते. भ्रष्टाचारी शासनकर्ते, निर्लज्ज राजकारणी, नोकरीसाठी पैशाची धावी लागणारी लाच, निर्विनी झालेली जनजाती

कलाकृतींतून माणदेशी संस्कृतीचे दर्शन रसिकांना घडते. माणदेशातील डोंगराळ भागातील लोकांचे सुखदुःख, परिसरातील दैन्य, दुःख, लोकांचे अज्ञान, अंधश्रद्धा, परस्मरांतील हेवेदावे आणि प्रतिकूल परिस्थितीत चिकाटीने जगण्याची वृत्ती माडगूळकरांच्या लेखणीने साकारलेली आहे. भाषा, जीवनातील अनुभव, निसर्गाशी समरस असलेला समाज, व्यक्तीचित्रणात्मक लेखनशैलीने प्रादेशिक जानपद दर्शन माडगूळकरांनी साहित्यातून मांडले. त्यांनी साकारलेल्या माणदेशी संस्कृतीच्या वर्णनाप्रमाणे उद्धव शेळके, रा. रं. बोराडे यांच्या लेखणीतून विदर्भातील ग्रामीण संस्कृतीचे चित्रण झाले तर श्री. ना. पेंडसे, मधु मंगेश कर्णिक यांच्या लेखणीने कोकणातील विश्व, त्याचे लोकजीवन रेखाटत कोकणपट्टीचा इतिहास, संस्कृती वाचकांसमोर मांडली. श्री. ना. पेंडसे यांच्या 'गारंबीचा बापू' या कादंबरीने मराठी रसिकांना कोकणातील खेड्याचे भावविश्व, तिथल्या प्रथा, धार्मिकता या साऱ्याची ओळख करून दिली. हर्णे बंदराजवळची गारंबी, गावातील साकव, व्याघ्रेश्वराचे मंदिर, गावातील शिवरात्रीचा उत्सव, नारळी पोफळीच्या बागा, गावकऱ्यांचे अंतरंग, त्यांच्या मनातील भावभावनांची गुंफण साऱ्यांनी रसिकांच्या मनावर चेटूक करणारी कादंबरी अशी ओळख 'गारंबीचा बापू' या कादंबरीची झाली. शंकर पाटील, द. मा. मिरासदार, रणजित देसाई यांच्या लेखणीने सातारा म्हणजेच पश्चिम महाराष्ट्राची रंगडी संस्कृती, इतिहास, बोली भाषा या पार्श्वभूमीवर लेखन केले.

रणजित देसाई यांनी 'माझा गाव' या कादंबरीत ग्रामीण भागातील माणसाचे वास्तव वर्णन करताना ग्रामीण माणसाचे जगणे स्वातंत्र्यपूर्व काळात कशाप्रकारचे होते. त्यांच्यातील परस्पर संबंध, माणुसकी, गावाविषयीची आत्मीयता तसेच संकट काळात एकमेकांना मदत करण्याची सहकार्याची भावना रेखाटली आहे. माणूस व समाज एकरूपपणे जगताना दोघेही एकमेकांमध्ये मिसळून जात असत. या कादंबरीचे नायक अप्पासाहेब इनामदार, पाटील, कुलकर्णी गावच्या प्रगतीसाठी बरेच काही करू शकत. आज मात्र हे चित्र बदललेले दिसते. समाज व वैयक्तिक जगणे यामध्ये तफावत पडत चाललेली दिसते. संस्कार हरवत जीवनात रूक्षपणा वाढलेला आढळतो. स्वार्थीपणा व भाऊबंदकीच्या रेट्यात खेड्यातही माणुसकी लोप पावत आहे. नव्या पिढीला जुनी परंपरा व संस्कारांची ओळख व्हावी या ओळीने रणजित देसाई यांची 'माझा गाव' कादंबरीची निर्मिती झाली. पूर्वी गावात चावडी, पाणवटा, शाळा, पंचायत या गोष्टींबरोबरच कुस्तीची तालीम असे तालमीत लहानांबरोबरच मोठ्यांची गर्दी कुस्तीच्या

फडासाठी जमत असे. अनेक सण समारंभ मांहेला आनंदाने साजरे करित असत. नवरात्राच्या उपवासासाठी सुवासिनीची लगबग चालू होत असे. घराची स्वच्छता, उपवासाच्या सामानाची यादी, नैवेद्य, देवस्थानची व्यवस्था, सीमोल्लंघनाची तयारी या साऱ्यात गावातील महिला सहभागी होत असत, आजच्या स्वकेंद्रित मानसिकतेच्या पार्श्वभूमीवर 'माझा गाव' विशेष ठसा वाचकांच्या मनावर उमटवताना आढळतो.

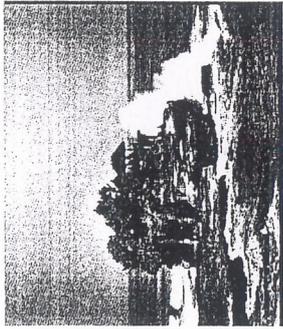
समारोप

साहित्य व संस्कृतीचा सहसंबंध पूर्वापार चालत आलेला आहे. संस्कृती हा जगण्याचा अविभाज्य भाग असून तिचे पडसाद साहित्याच्या विविध लेखनप्रकारांतून उमटताना दिसतात. त्यामुळेच साहित्य हा समाजमानाचा आरसा आहे असे म्हटले जाते. काळाच्या प्रवाहात विविध बदलांना सामोरे जाताना वाचनसंस्कृतीचा हात धरून नव्या पिढीने वाटचाल केली पाहिजे यासाठी बदललेल्या माध्यमांच्या मदतीने आधुनिक पद्धतीने वाचनाचा प्रसार करणे ही लेखक व प्रकाशकांची नैतिक जबाबदारी असेल. इंटरनेट, ई-बुक, ब्लॉक लेखन असे नवे पर्याय नवी पिढी सहजपणे हाताळू शकते. काळ कोणताही असो संस्कृती व साहित्य यांचा परस्परसंबंध कालातीत आहे.



संदर्भ

- १) कर्वे इरावती, मराठी लोकांची संस्कृती.
- २) मंगळवेढेकर राजा, मराठमोळा महाराष्ट्र, दिलीपराज प्रकाशन, पुणे.
- ३) देशमुख सदानंद, बारोमास, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, पुणे.
- ४) देसाई रणजित, माझा गाव, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.
- ५) पेंडसे श्री. ना., गारंबीचा बापू, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, पुणे.



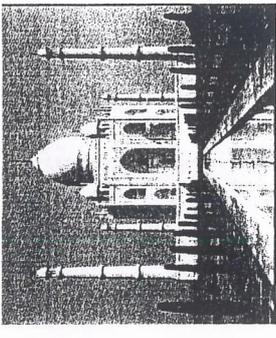
12th

International Interdisciplinary Conference at Bali, Indonesia

Theme:

‘ The Aspects of Various Cultures at
National & International Level ’

‘ देश-विदेशातील विविध संस्कृतींचे स्वरूप ’



Sekolah Tinggi Pariwisata Bali International
International Bali Institute of Tourism, Bali, Indonesia

Organized By



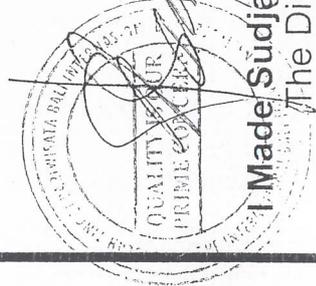
Snehavardhan Research Institute,
Pune, India

Certificate

This is to certify that **Dr. Pratibha Pradip Patne** has participated
and presented the Research Paper on

‘ संस्कृती व साहित्याचा अनुबंध ’

In the International Interdisciplinary Conference on
Monday, 11th June 2018, at Bali, Indonesia.



I Made Sudjana SE, MM, CHT, CHA
The Director (STPBI)

(International Bali Institute of Tourism,
Bali, Indonesia)



Dr. Snehal Tawre
President

Snehavardhan Research Institute
Pune, India.

115



KHANDALA VIBHAG SHIKSHAN SAMITI'S
SUSHILA SHANKARRAO GADHAVE MAHAVIDYALAYA, KHANDALA

Criterion III

Research, Innovation and Extension

Key Indicator: 3.3-Research Publication and Awards.

3.3.2. Number of Books and Chapter in edited volume/Book Published and Paper published in National/International Conference Proceeding per Teacher during the last five years.

2017-2018

| Sr no | Name of book and chapter in edited volume published /paper in national /international conference proceedings | ISBN No | Name of publisher /journal and level |
|-------|--|------------------------|--|
| 1 | Navbharat Antargat marathitil samiksha vichar ,Dr. patane pratibha | ISBN-978-93-80321-71-1 | Dr .L.V Taware snehvardhan prakashan |
| 2 | Navbharat Antargat Sahityache pravah aani prakar , Dr. patane pratibha | ISBN-978-93-80321-72-1 | Dr .L.V Taware snehvardhan prakashan |
| 3 | katha vangmayachi navata punarvichar Dr. patane pratibha | ISBN-978-93-86387-33-2 | Rupali Aawachare ,Nikhil lambhate Yashodip publication ,pune |


Principal
Sushila Shankarrao Gadhave Mahavidyalaya
Khandala, Tal.Khandala, Dist.Satara



नवभारत अंतर्गत
मराठीतील
समीक्षा विचार

डॉ. प्रतिभा प्रदीप पाटणे

2017 18

0



‘नवभा
प्रारंभापासून
गेलेले परंतु
असे सातत्य
‘नवभारत’
केंद्रभूत ठेवू
घडविणारे
सांस्कृतिक
‘नवभारत’
व्यापक आ
डॉ. प्रतिभा

- ◆ स्नेहवर्धन प्रकाशन : क्र. १०१३
- ◆ ‘नवभारत’ अंतर्गत मराठीतील समीक्षा विचार (समीक्षा -संदर्भ)
- ◆ प्रकाशक आणि मुद्रक :
डॉ. एल. व्ही. तावरे
स्नेहवर्धन प्रकाशन
८६३ सदाशिव पेठ, महात्मा फुले सभागृहामागे,
पुणे - ४११ ०३०.
स्थिरभाष : (०२०) २४४७ २५ ४९ / २४४ ३६ ९६१
ई-मेल : snehaltawre@gmail.com
- ◆ मुखपृष्ठ : राजेंद्र गिरधारी
- ◆ प्रथमावृत्ती : २६ जानेवारी २०१८, गणराज्य दिवस
- ◆ © डॉ. प्रतिभा प्रदीप पाटणे
- ◆ अक्षरजुळणी : एस.एस. ग्राफिक्स, पुणे
- ◆ मुद्रणस्थळ : स्मिता प्रिंटर्स, पुणे
- ◆ पृष्ठसंख्या : २२०
- ◆ ISBN 978 - 93 - 80321 - 71 - 1
- ◆ मूल्य : ₹ २५०/-
\$ 5



स्नेहवर्धन

प्रकाशन

अनुक्रमणिका



- मनोगत /५
- १) 'नवभारत' अंतर्गत समीक्षा तत्त्वविचार /७
 - संदर्भ ग्रंथ/५९
- २) 'नवभारत' अंतर्गत समीक्षा प्रकारनिहाय समीक्षा विचार /
 - तात्त्विक समीक्षा/६०
 - समाजशास्त्रीय समीक्षा /६४
 - गांधीवादी समीक्षा /७०
 - ऐतिहासिक समीक्षा /७४
 - चरित्रात्मक समीक्षा /७५
 - स्त्रीवादी समीक्षा /९९
 - तौलनिक समीक्षा /१०२
 - भाषावैज्ञानिक समीक्षा /१०५
 - उपयोजित समीक्षा /१०६
 - रूपवादी समीक्षा /१०७
 - आस्वादक समीक्षा /१०९
 - संदर्भ टीपा /११५
- ३) 'नवभारत' अंतर्गत संकीर्ण समीक्षा विचार /११६
 - काव्य समीक्षा /११६
 - कथा समीक्षा /१३५
 - कादंबरी समीक्षा /१४४
 - नाट्य समीक्षा /१५३
 - ललित गद्य समीक्षा /१५७
 - चरित्र - आत्मचरित्र समीक्षा /१६८
 - वैचारिक लेख /१८६
 - समीक्षाग्रंथ समीक्षा /१९४
 - पत्रव्यवहार /२०९
 - संदर्भ ग्रंथ /२२०



प्रारं
गेले
असे
'नव
केंद्र
घड
सां
'नव
व्या
डॉ.

स्नेहव
प्रकाश

Rayne Madam
book

‘नवभारत’ अंतर्गत
साहित्याचे प्रवाह
आणि प्रकार



डॉ. प्रतिभा प्रदीप पाटणे





- ॐ स्नेहवर्धन प्रकाशन : क्र. १०१४
- ॐ 'नवभारत' अंतर्गत साहित्याचे प्रवाह आणि प्रकार
(समीक्षा - संदर्भ)
- ॐ प्रकाशक आणि मुद्रक :
डॉ. एल. व्ही. तावरे
स्नेहवर्धन, ८६३ सदाशिव पेठ, महात्मा फुले सभागृहामागे,
पुणे - ४११ ०३०.
स्थिरभाष : (०२०) २४४७ २५ ४९ / २४४३६९६९
ई-मेल : snehaltawre@gmail.com
- ॐ मुखपृष्ठ : राजेंद्र गिरधारी
- ॐ प्रथमावृत्ती : १९ फेब्रुवारी २०१८, छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती
- ॐ © डॉ. प्रतिभा प्रदीप पाटणे
- ॐ अक्षरजुळणी : एस.एस. ग्राफिक्स, पुणे
- ॐ मुद्रणस्थळ : स्मिता प्रिंटर्स, पुणे
- ॐ पृष्ठसंख्या : १२०
- ॐ ISBN 978 - 93 - 80321 - 72 - 1
- ॐ मूल्य : ₹ १३०/-

माझे आजोबा
पूज्य कै. महादेव वाडकर
माझी आज्जी
कै. चिंगूबाई महादेव वाडकर
तसेच
माझे सासरे
आदरणीय कै. राजाराम पाटणे
माझ्या सासुबाई
श्रीमती शालिनी राजाराम पाटणे
आणि
माझे परमपूज्य वडील
कै. आनंदा महादेव वाडकर
माझ्या मातोश्री
कै. लक्ष्मीबाई आनंदा वाडकर
या सर्वांना
कृतज्ञतापूर्वक ३

डॉ. प्रति

‘नवभारत’च्या अंतर्गत मराठीतील समीक्षा विचार स्वातंत्र्योत्तर काळातील मराठी साहित्य व समीक्षा यांची अत्यंत तटस्थतेने व सविस्तर दखल ‘नवभारत’ने घेतलेली आहे. प्रायः महत्त्वाच्या वाङ्मयीन प्रवाहांचे व प्रकारांचे समीक्षा लेखन ‘नवभारत’मध्ये पाहावयास मिळते. त्याचे साक्षेपी विवेचन व एक सलग चित्र डॉ. प्रतिभा पाटणे यांनी अभ्यासपूर्ण रीतीने आणि संशोधक वृत्तीने रेखाटले आहे. मासिकाच्या संशोधनाचा हा एक आदर्श वस्तुपाठच या ग्रंथात वाचकांना निश्चितच पाहावयास मिळतो.

डॉ. पंडित टापरे



स्नेहवर्धन

प्रकाशन



मराठी साहित्यातील नवता

* संपादक *
डॉ. अपर्णा साबणे
प्रा. संदीप लांडगे





संपादकीय

मराठी साहित्यातील नवता - डॉ. अपर्णा साबणे, प्रा. संदीप लांडगे
Marathi Sahityatil Navata -
Dr. Aparna Sabne, Prof. Sandeep Landge

| | |
|--|---|
| © डॉ. अपर्णा साबणे महेश सोसायटी, बिबवेवाडी, पुणे संपर्क क्र.- ९८५०८२२७७५ | प्रकाशक रूपाली अवचरे, निखिल लंभाते, यशोदीप पब्लिकेशन्स, २१७ ब, जोरी निवास, नारायण पेठ, पुणे-३०. संपर्क क्र. - ९८५०८८४१७५, ९०२८७३६००९, (०२०) ४१२१७४४१ |
| प्रथम आवृत्ती २८ फेब्रुवारी २०१८ | |
| अक्षरजुळणी यशोदीप क्रिएशन्स, पुणे | मुद्रक समर्थ प्रोसेस, पुणे |
| मुखपृष्ठ निखिल लंभाते | |

मूल्य - ₹ १६०/-

ISBN : 978-93-86387-33-2

मासाहेब मोहोळ महाविद्यालय
राज्यस्तरीय चर्चासत्रात 'साहित्यातील नवता'
चर्चासत्रासाठी विचारात घेतला होता. या चर्चा
आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठाचे माजी
यांनी केले होते. चर्चासत्राचा समारोप स
मराठी विभागातील डॉ. अविनाश आव
चर्चासत्रासाला प्रतिसादही खूप चांगला
म्हणजे हे साहित्यातील नवता हे पुस्तक. प्रत्येक
काळात या नवतेचे वेगवेगळे रूप
साहित्याची भाषा वापरताना लेखक अन
आता काही वेळा भाषा सतत वापराने बेच
नेमाडे म्हणतात, "“निळेजांभळे” रंग, 'म
कोवळी उन्हे', 'रम्य पहाट' इ. अशा र
त्यांच्या पिष्टोक्ती तयार होतात. अनुभव
जुनाट भाषिक रूपांनी तो संपूर्ण कंगोच्यां
होत नाही. भाषिक रूपांना नवीन अर्थ
झालेली प्रमाणके मोडणे आवश्यक ठरते।
भाषिक रूपांबद्दल आहे, तसेच वर्ण्य वि
डॉ. कीर्ती मुळीक यांनी आपल्या
नवता' कशी विचक्षण असते, हे सांगित
संगणक, इंटरनेट, फेसबुक यांच्यामुळे स

अनुक्रमणिका

- * मराठी कादंबरी साहित्यातील नवता - पुनर्विचार / डॉ. कीर्ती मुळीक / ९
- * मराठी प्रादेशिक ग्रामीण कादंबरीचा विकास / प्रा. डॉ. बागूल एम.एम / १७
- * स्वातंत्र्योत्तर कालखंडातील मराठी कादंबरी / प्रा. नानासाहेब पवार / २३
- * मराठी ग्रामीण कादंबरीतील नवता (कालखंड- १९७५ ते २०१०) / संजीवनी कुलकर्णी / ३१
- * कथा वाङ्मयाची नवता- पुनर्विचार / प्रतिभा पाटणे / ४७
- * 'कथा' या साहित्यप्रकारातील नवता / प्रा. डॉ. लता महाजन / ५४
- * साहित्यातील नवता कथेच्या संदर्भात / प्रा. कामिनी रणपिसे / ६१
- * संत गाडगेबाबांच्या कीर्तनातून नवतेचा पुनर्विचार / प्रा. सौ. मोहिते सुलभा शिवाजीराव / ६८
- * नव्वदोत्तरी मराठी ग्रामीण कवितेतील नवता / प्रा. संदीप विलास लांडगे / ८०
- * समकालीन स्त्रीकाव्यातील नवता / सरिता दरक-सोमानी / ९१
- * २१ व्या शतकातील मराठी कवितेतील नवसंवेदना / डॉ. शोभा तितर / ९९
- * पोवाडा या काव्यप्रकाराविषयी नवविचार / रासगे गंगाधर बापू / १०८
- * काव्य साहित्य में नवीनता : पुनर्विचार / हिमालया सकट / १२०
- * मराठी विज्ञानसाहित्यातील नवता / डॉ. रवींद्र रामचंद्र शिंदे / १२७
- * मराठी नाट्यलेखनातील नवता - पंपरा काही निरीक्षणे / प्रा. प्रमोद शंकर पवार / १३९

मराठी कादंबरी साहित्यातील नवता - पुनर्विचार

डॉ. कीर्ती मुळीक

नवता म्हणजे नवेपण. मनाला आकर्षित करणारं, उत्तेजित करणारं. कधी हे नवेपण चार दिवस टिकतं नि पाचव्या दिवशी मावळूनही जातं. तर कधी हे नवेपण समाजाला पार ढवळून टाकतं. त्याच्यात अंतर्बाह्य परिवर्तन घडवून आणतं. 'क्रांतिपूर्ण नवता' असे याला नाव देता येईल. ही नवता विलक्षण असते. ती आली की आता हिच्यापुढे दुसरं नवीन काहीही येणार नाही, अशी आपली खात्री पटते. पण काही वर्ष जातात नि पुन्हा त्या नवतेतलं नवं आपल्यापुढे येऊन ठेपतं. संगणकाचं उदाहरण पाहावे. १९६० च्या सुमारास दूरदर्शनने भारतात प्रवेश केला. घरांमध्ये प्रत्यक्ष सिनेमा या जाणिवेने जो तो थरारला आणि या आश्चर्यकारक शोधापुढे आता नवा शोध नाही, असं ज्याला त्याला वाटू लागलं. पण २००० मध्ये ज्याच्या त्याच्या घरी संगणक आला, हातात घेऊन कुठेही फिरता येईल असा भ्रमणध्वनी आला. इंटरनेट आलं, फेसबुक आलं, वॉट्सअप आलं. त्याबरोबर साहित्याच्या जगतातही क्रांती घडली. ई-साहित्य आलं ! म्हणजे कसं ? सोप्यावर पडावं, हातातलं आयपॅड किंवा ऑनड्राईड टॅब्लेट उघडावा नि वाचत पडावं. तसा साहित्याचा एक गुणधर्म आहे. हातात घेऊन वाचायला लागलो की झोप छान येते. मग ते ई-साहित्य असो की पांढऱ्या शुभ्र कागदांनी बनलेला बोजड ग्रंथ असो. यात काही नवता आली नाही. असो. या ई-साहित्यामुळे, संगणकाच्या अंतर्जालामुळे साहित्यक्षेत्र एका गंमतीशीर

मराठी साहित्यातील नवता / ९



अनुक्रमणिका



- * मराठी कादंबरी साहित्यातील नवता - पुनर्विचार / डॉ. कीर्ती मुळीक / १
- * मराठी प्रादेशिक ग्रामीण कादंबरीचा विकास / प्रा. डॉ. बागूल एम.एम / १७
- * स्वातंत्र्योत्तर कालखंडातील मराठी कादंबरी / प्रा. नानासाहेब पवार / २३
- * मराठी ग्रामीण कादंबरीतील नवता (कालखंड- १९७५ ते २०१०) /
संजीवनी कुलकर्णी / ३१
- * कथा वाङ्मयाची नवता- पुनर्विचार / प्रतिभा पाटणे / ४७
- * 'कथा' या साहित्यप्रकारातील नवता / प्रा. डॉ. लता महाजन / ५४
- * साहित्यातील नवता कथेच्या संदर्भात / प्रा. कामिनी रणपिसे / ६१
- * संत गाडगेबाबांच्या कीर्तनातून नवतेचा पुनर्विचार /
प्रा. सौ. मोहिते सुलभा शिवाजीराव / ६८
- * नव्वदोत्तरी मराठी ग्रामीण कवितेतील नवता / प्रा. संदीप विलास लांडगे / ८०
- * समकालीन स्त्रीकाव्यातील नवता / सरिता दरक-सोमाणी / ९१
- * २१ व्या शतकातील मराठी कवितेतील नवसंवेदना / डॉ. शोभा तितर / ९९
- * पोवाडा या काव्यप्रकाराविषयी नवविचार / रासगे गंगाधर बापू / १०८
- * काव्य साहित्य में नवीनता : पुनर्विचार / हिमालया सकट / १२०
- * मराठी विज्ञानसाहित्यातील नवता / डॉ. रवींद्र रामचंद्र शिंदे / १२७
- * मराठी नाट्यलेखनातील : नवता - परंपरा काही निरीक्षणे /
प्रा. प्रमोद शंकर पवार / १३९

125



कथा वाङ्मयाची नवता - पुनर्विचार

डॉ. प्रतिभा पाटणे

प्रस्तावना -

मूल्यपरिवर्तनाच्या जाणिवेने दुसऱ्या महायुद्धानंतर साहित्यात लक्षणीय बदल झाले. हरिभाऊ आपट्यांपासूनची कथा साधारण १९४० पासून परिवर्तनाच्या दिशेने मार्गक्रमण करताना दिसते. या प्रक्रियेत साहित्य, अभिरुची, सत्यकथा अशा मासिकांचा सहभाग मोलाचा होता. पूर्वीच्या कथा व नवकथेमध्ये निकष, आशय, अभिव्यक्तीतील बदल अशा अनेक कारणपरंपरेने परंपरागत कथा बदलून नवकथा रूपाला आली.

नवकथेचे स्वरूप -

कालप्रवाहाच्या वळणावर सतत बदल घडत असतात. परंपरांची चौकट मोडून वास्तवतेकडे झुकणारे नवसाहित्य १९४० च्या सुमारास अवतरले. नवे प्रश्न, नवी आव्हाने, नव्या जाणिवे व पारंपरिक संस्कृती मूल्यांचा संघर्ष होत असतो. त्यातूनच नवे युग अवतरत असते. साहित्यातही असेच बदल घडत असतात. कवितेच्या प्रांतात मढेकरांच्या कवितेने आमूलाग्र बदल घडवला तर कथेच्या प्रांतात गंगाधर गाडगीळांना नवकथेचे प्रवक्ते मानले जाते. नवकथानिर्मितीत विविध सामाजिक, सांस्कृतिक घटनांचा प्रभाव पडला. त्यात प्रामुख्याने पाश्चात्य साहित्याचे संस्कार कारणीभूत असलेले दिसतात. तत्कालीन दुसऱ्या महायुद्धाचे परिणाम जगाच्या विफलतेला कारण ठरले. त्यातून मानवी मूल्यांचा न्हास होऊन अश्रद्ध वृत्तीचे सामाजिक वातावरण



तयार झाले. वाढत्या औद्योगिकीकरणाने मानवी मनाचे अस्तित्व या
 मॉडर्न यांच्या विचारांनी नवी दृष्टी दिली. मानवी मनाने अस्तित्व या
 विषयीच्या जाणिवेत मूलभूत बदल घडून आला. मानवी मनाने अस्तित्व या
 दृष्टिकोन आला. या साऱ्या बदलाशी जमवून घेऊ पाहणारा माणूस परिस्थितीशी
 जुळवून न घेऊ शकल्याने मनामध्ये गुदमरू लागला. अशा जगण्याचे चित्रण
 कथेमधून मांडताना मनोविश्लेषणाचा आधार लेखकांनी घेतला. माणसाच्या
 जगण्यातील अंतर्विश्वाचे दर्शन घेण्याची वृत्ती वाढली. आधुनिक जीवनातील
 उद्ध्वस्त विश्व रेखाटनाच्या नवकथेविषयीची म. ट. हातकणंगलेकर पुढील
 प्रतिक्रिया मांडतात, "मानवी मनाचे सूक्ष्मतिसूक्ष्म व्यापार, प्रवाही संज्ञाकणांची
 परस्पर सुसंगत अगर विसंगत आवर्तने, स्थूल व सूक्ष्म पातळ्यांवर दिसणाऱ्या
 व धावणाऱ्या विकार वासनांच्या निसटत्या हालचाली या सर्वांतून उमटणाऱ्या
 विरणाऱ्या लयाकृती व त्यातून जाणवणारे, मनाला अस्वस्थ बधिर करणारे
 जीवनदर्शन ही नवकथेची उद्दिष्टे बनली."

नवकथेची ठळक वैशिष्ट्ये-

वास्तववादी दृष्टिकोन नवकथेतून लेखक मांडू लागले. संमिश्र संस्कृत
 दर्शनामध्ये वास्तव समाजदर्शन भोगवादी समूहवृत्ती, हिंसक कामवासनेचे
 जीवनदर्शन नवकथा भिन्न प्रवृत्तीतून व्यक्त होऊ लागली.
 परंपरेचा नवा शोध घेणाऱ्या नवकथेवर अश्लिलतेचा, तसेच कुरूपतेचा
 आरोप झाला. नवसाहित्यातून नवयुग, विज्ञाननिष्ठा, यंत्रप्रधानता तंत्रविकास,
 दळणवळण साधनांची वाढ, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण अशी प्रगतीमय
 प्रकाशमय बाजू जशी रेखाटली, तशी दुसरी अंधकारमय जाणीवही कळव
 दिली. साचेबंदपणा जगण्यातील अस्थिरता, बकालपणा, अनेक व्यभिच
 अनुभवांचे पडसाद नवकथेत व्यक्त झाले.

मानवी मन नवकथेत केंद्रीभूत झाले. माणसाचे मनाचे अनेक पद
 नवकथेने उलगडले. मानसशास्त्रीय संकल्पनेच्या आधारे मानवी भावभावना
 नव्या मांडणीच्या रूपात जागृत झाली. नव्या मनाचा आत्मशोध, म्यानुअल
 आत्मवेध यांतूनच स्वच्छंदवाद, वास्तववाद, अतिवास्तववाद अशी तात्त्विक
 विचारसरणी उदयाला आली.

४८ / मराठी साहित्यातील नवता



फ्राईड,
त्व या
ग नवा
प्रतीशी
चित्रण
गच्या
तील
ढील
गांची
त्या
च्या
गारे,

नवकथेने कथा तंत्राचे रूप बदलून टाकणे अंतरंग व बाह्यरंग पालटून नवतेची कास पकडून समकालीनतंत्री नाते सांगणारी लवचीक स्वगतशील वृत्ती परंपरेचा नवा अर्थ लावू लागली. नवता, परंपराविरहितता, प्रयोगशीलता या वैशिष्ट्यांच्या मदतीने परंपरेचा नवा अर्थ शोधण्याची वृत्ती नवकथेत आढळते. कथानकाचे बंधन नाकारून विविध घाटांची रूपे कथेतून मांडताना साहित्य आणि जीवनाचा संबंध जुळवून आणला. नवदृष्टी, विवेकवाद, बुद्धिवाद, व्यक्तिस्वातंत्र्य, समता, बंधुता अशा मूल्यांनी सांस्कृतिक जीवन प्रगल्भ केले. नवकथेतील नव हे विशेषण मूल्यवाचक आहे. कालसापेक्षतेचा अर्थ त्यात अभिप्रेत नव्हता. नव्या जाणिवे व्यक्त करण्यासाठी विविध भावानुभाव व भावनाविष्कार मुक्तपणे चित्रित केला.

नवकथेच्या परिवर्तनात गंगाधर गाडगीळ, अरविंद गोखले, पु. भा. भावे, व्यंकटेश माडगूळकर या कथाकारांचा मोलाचा सहभाग आहे. नवे सौंदर्यसूत्र, लयीचे भान, प्रतिभा -प्रतिकांचा वापर करत सांप्रदायिकतेचा त्याग करून साहित्यनिर्मिती करत गंगाधर गाडगीळांच्या कथेने अनेक नवे प्रयोग केले. प्रयोगशीलता हा त्यांच्या कथेचा विशेष. अनुभवी, आशय, भाषाशैली, कथानकाचा बंध, या सर्व घटकांतील बदलांमुळे नवी मूल्यादर्श साकारणारी कथा गाडगीळांनी रेखाटली. महायुद्धात उध्वस्त झालेल्या मानवी जीवनाचे व त्यातून भ्रमनिरास माणसांच्या मनाचे प्रतिबिंब गाडगीळांच्या कथेत जाणवते. त्यांची कथा जीवनातील असंबद्धता, संमिश्रता, उपहास, एकटेपणा व्यक्त करत असली, तरी कलाकृतीकडे गंभीरपणे पाहण्यास नवी दृष्टी देते. रोजच्या दैनंदिन घटनांमध्ये कथेची बीजे दडलेली असतात. त्या अनुभवांना कथेच्या माध्यमातून अभिव्यक्त करण्याची, नव्या तंत्राची जाणीव गाडगीळांच्या कथेतून होते.

'कडू आणि गोड', 'कबुतरें', 'तलावातले चांदणे', 'काजवा', 'भागलेला चांदोबा', 'बिनचेहऱ्याची संध्याकाळ' अशा विविध कथा स्वतंत्र वैशिष्ट्यपूर्ण घाटणीच्या त्यांनी लिहिल्या. प्रौढ मनातील विचार व विकारांचे दर्शन, मानसशास्त्रीय वास्तवावर भर, उपहास, उपरोध यांचा वेध गाडगीळांच्या कथेने घेतला. 'किडलेली माणसे' सारख्या कथेतून मध्यमवर्गीय मानसिकता,

मराठी साहित्यातील नवता / ४९



जीवनासंस्कृतीतील संकुचितता, शुद्धता प्राधान्याने मांडताना मुंबईतील जीवनासंस्कृतीचे दर्शन होते. गाडगीळांच्या कथेविषयी वामुदेव सावंत प्रतिबिंबाच्या व्यक्त करतात, "मध्यमवर्गातल्या जीवनातले नानाविध प्रसंग घवघवांच्या आणि पवतीच्या व्यक्ती, त्यांच्या जीवनातील नानाविध प्रसंग अनेक प्रकारचे प्रश्न, त्यांची मुख्य-दुःखे, सामाजिक आणि मानसिक ताणतणाव यातून गाडगीळांच्या कथेचे आशयविश्व साकार झालेले आहे. मध्यमवर्गीय कुटुंबातील मुलांपासून ते पेंशनर म्हाताऱ्यापर्यंत आणि दुबळ्या कारकुनांपासून ते बुद्धिजीवी प्रोफेसरपर्यंत अनेकविध पात्रे त्यांच्या कथेतून साकार होतात."

या काळातील दुसरे महत्त्वाचे कथाकार अरविंद गोखले महानगरीकरणाच्या प्रक्रियेत नागर मध्यमवर्गाची संवेदनशीलता मांडताना त्यांच्या कथेत व्यक्ती हा केंद्रबिंदू आहे. यांत्रिकी चक्रात अडकल्यावर त्याचा ताण ओढप्रस्ताचे जीवन, स्वास्थ्य हरवत चालल्याची जाणीव अशा दृष्टींनी त्यांचे कथा उल्लेखनीय आहे. व्यक्तिमनाचा खोलवर कानोसा घेताना सामान्यांच्या अंतर्गात ते शिरतात. 'मंजुळा' ही कथा या दृष्टीने उल्लेखनीय आहे. तिचे मनोविश्व व भावानुभाव सूक्ष्मपणे रेखाटले आहेत. त्यांच्या कथेतील पत्रे अनेक स्तरांतील असून त्यांची दुःखेही सामान्यापेक्षा वेगळी आहेत. गोखल्यांच्या सर्वच नयिका परिवर्तनाच्या फेऱ्यात सापडलेल्या दिसतात.

'कातरवेळ', 'मंजुळा', 'अनय', 'रिक्ता', 'विघ्नहर्ती' अशा विषयांत महायुद्ध, बेकारी, १९४२ चे आंदोलन, जातीय दंगे, फाळणी, महागाई, वेश्यांचे जीवन अशा वास्तवदर्शी घटनांचे प्रतिबिंब दिसते. त्यांच्या कथेतील निवेदनशैली वाचकांना आकर्षून घेते.

पु.भा.भावे -

वरील दोन्ही कथाकारांपेक्षा निराळी कथा पु.भा.भावे यांची आहे. बाळ राणे त्यांच्या कथेविषयी सांगतात. 'भाव्यांनी आपल्या कथेत कल्पनाविलासापेक्षा भावनोत्कटता निसंकोचपणे व्यक्त केली आहे. प्रणयभावनेच्या विविध छटा त्यांनी प्रभावीपणे रेखाटल्या आहेत.' त्यांच्या कथांमधून अपारंपरिक आधुनिक कथा दृष्टी मांडली. उद्दाम भाव-भावना व्यक्त करणारी प्रभावी भाषा, कधी लवचीक, तर कधी मुक्तपणे कथेत

142

आली. कोणतीच बंधने स्वीकारण्यास भाष्यांची कथा तयार नसल्याने त्यांच्या भाषेत, तसेच अभिव्यक्तीत विपुलता, फुलोरा व आवेग हे विशेष येतात. प्रेमानुभवाच्या अस्फुट आविष्कारापासून उद्दाम वासनेपर्यंत विविध भावाविष्कार त्यांनी मोकळेपणाने रंगविले. 'सत्तरावे वर्ष' कथेत कुमार वयातील बबनची उन्मादावस्था आणि पस्तीशीतील सुशीलाबाई अशा दोन पातळ्यांवरील प्रणयी भावभावना पात्रांच्या मनोव्यापाराचे दर्शन घडवले. 'सावल्या', 'स्वप्न', 'ओढ', 'अखेर', 'मुक्ती' अशा कथांपासून चिरेबंदी रचनाशिल्प, सूक्ष्म मनोविश्लेषण, प्रेमभावनेचा उत्कट आविष्कार जीवनातील भव्य घटनांचे दर्शन होते. पुढील काळात त्यांची कथा बदलत गेली. परंतु प्रारंभी त्यांनी नवकथेला योगदान दिले. त्यांची कथा अनुभव कलादृष्टीपेक्षा नैतिक दृष्टीने नियंत्रित होऊ लागली.

ग्रामीणतेचा वेध मध्यमवर्गीय दृष्टीने न घेता, ग्रामीण संवेदनशीलतेतून घेणारे ग्रामीण नवकथेचे अग्रदूत व्यंकटेश माडगूळकरांनी माणदेशी माणसांचे, वृत्ती-प्रवृत्तीचे चित्रण, तेथील निसर्ग, माणसांचा स्वभाव, अडाणीपणा, त्यांच्या छोट्याश्या विश्वातील विविध छटा यांचे चित्रण पूर्वसंकेत झुकारून साकारले. ग्रामीण कथेला अद्भुतता व कल्पनारम्यतेच्या कोंडीतून सोडवून वास्तवतेचा नवा आदर्श माडगूळकरांनी दिला. सूक्ष्म निरीक्षण, प्रगल्भ निवेदन, ग्रामीण बोलीभाषेचा कल्पक व अचूक वापर या सान्यांमुळे व्यक्तिचित्रात्मक कथेला अर्थपूर्णता आणली. व्यक्तीबरोबर सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रादेशिक वास्तवाचे भान त्यांच्या कथेने दिले. 'सर्विस मोटार' कथेत स्थित्यंतराची प्रक्रिया, खेड्याचे शहरीकरणात रूपांतर होताना झालेली उलथापालथ दाखवताना ती कुंभार कुटुंबाची कथा प्रतिनिधिक होते.

'बाजाराची वाट' मधील समूहमनाची संस्कृती अनेक माणसांच्या मनाचे विश्लेषण करते. नाथिकेचे मूल नाही म्हणून दुःख वैयक्तिक न राहता, कुटुंबाचे, गावाचे दुःख होते. या सान्यांची मानसिकता व मनातील द्वंद्व रेखाटताना खेड्यातील प्रतिष्ठेचे मानदंड, रूढी-रिवाजाचे प्राबल्य, आशय, संद्रिय रचनाबंधामुळे इतर कथाकारापेक्षा आदर्श निर्माण करण्याचे श्रेय व्यंकटेश माडगूळकरांकडे जाते. व्यंकटेश माडगूळकरांच्या कथेचे यथार्थ वर्णन करताना



हातकाणंगलेकर म्हणतात, "व्यंकटेश माडगूळकरांनी दुःखाच्या संश्र खंडेन तेवणाऱ्या माणदेशी माणसातील माणुसकीचा ऐनजीनशीपणा आणि त्याच्या देवाची शोकमग्नता अभिजातपणे साकार केली होती."

या चार कथाकारांच्या योगदानात भर घालण्याचे कार्य शांताराम, दि.बा.मोकाशी, सदानंद रेगे यांच्या कथालेखनाने केले. शांताराम यांच्या 'संत्र्याचा बाग', 'शिरवा' संग्रहातील कथेत निव्वळ नागर संस्कृतीचे चित्रण नसून ग्रामीण परिसर, आदिवासी जीवनसंस्कृती, वन्य जीवनाचा वेध घेतला आहे.

दि.बा. मोकाशी यांच्या 'लामणदिवा'मध्ये जगण्याची धडपड करणाऱ्या मध्यमवर्गीय माणसाच्या सुखदुःखाची दखल घेताना सौम्य उपरोध, मिस्किलपणा, अस्तित्वाविषयीचे तात्त्विक प्रश्न यांचा मागोवा घेतला आहे. जन्म-मृत्यूचे रहाटगाडगे जीवनाची ओढ, मृत्यूचे अटळपण, या वास्तवात सुख-दुःख व नैतिक पेच 'आता आमोद सुनासि आले' कथेत उत्कृष्टपणे रेखाटला आहे.

सदानंद रेगे यांच्या 'जीवनाची वस्त्रे', 'चंद्र सावली कोरतो' कथासंग्रहात स्वप्नसदृश रहस्यमय कथा, अनुभव घेण्यातील तिरकसपणा, फॅटसी अशा वैशिष्ट्यपूर्ण घटकांनी अंतर्मनाचा ध्यास घेतला. स्त्रियांच्या समस्या, त्यांची सुख-दुःखे, भावभावना रेखाटणाऱ्या स्त्री कथाकारांमध्ये वसुंधरा पटवर्धन, इंदिरा संत, सरिता पत्की, शांता शेळके, कमला फडके, सुमती क्षेत्रमाडे यांची नावे घेता येतील. स्त्री जीवनातील कटू सत्य अलिप्तपणे मांडण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला.

समारोप -

नवकथेच्या निर्मितीने कलास्वातंत्र्याचे नवे वातावरण घडवले. जीवनाकडे पाहण्याची नवी दृष्टी, चिकित्सक ताणतणाव, सांस्कृतिक जाणिवांचा संकर अशा अनेक घटकांमुळे नवकथा जुन्या कथेपेक्षा वेगळी ठरली. आशय व अभिव्यक्तीतील बदलाने मानसिक संवाद साधताना जीवनाच्या सर्व अंगांना ती स्पर्श करते. ग्रामीण वास्तवाचे सूक्ष्म दर्शन, वास्तववाद, अस्तित्त्ववाद, अतिवास्तववाद, कलेत स्वतःच शोधण्याची वृत्ती एकाकीपणा निर्माणचे

मानवीकरण अशा आशयबघात पाहिलेली नवकथा कोणताही संकीर्ण नाही. कथेच्या संकल्पनांमधील नवी गर्भदृष्टी प्रकट करून नवकथेने नवे अनेकविध शक्यतांचे सौंदर्यभान निर्माण केले. त्यामुळेच नवकथा पहिल्या पिढीने पाडलेल्या कलात्मक पातळी पुढच्या पिढीतील आस्था व आवाहन करणारी होती.

नवकथेने मराठी कथेचा कायाकल्प घडवला. या काय संशयकथा इ. नियतकालिकांनी सहभाग घेतला. कथेच्या आश्रयित्वाने दिले, तसेच नवे विषय गंभीरपणे हाताळले.

नवी अनुभूती, नव्या जाणिवा लवचीकपणे हाताळून प्रवृत्ती नवकथेने साकारल्या. जीवनाकडे पाहण्याची एक नवी दृष्टी, मानवी अंतर्मनाच्या वास्तव जीवनाचे चित्रण करत बदलले. मनोविश्लेषणाचे महत्त्व सिद्ध करणाऱ्या नवकथेचे कथानुबंध नाकारता येत नाहीत. नवकथेने ज्या नव्या त्याच वाटेवरून आजची कथा वाटचाल करताना दिसते. यांच्यातील परस्पर संबंध जुळवून आणण्याचे महत्त्वपूर्ण काम आहे.

संदर्भ -

- १) 'मराठी कथा : रूप आणि परस्पर', म. द. हातकणंगले पुणे, मार्च १९८६, पृ. २१.
- २) 'प्रा. गंगाधर गाडगीळ यांचे साहित्य', संपा. प्रल्हाद मराठी अकादमी, गोवा, ऑगस्ट १९९७, पृ.
- ३) 'मराठी कथेचे कथानक', बाळ राणे, ग्रंथाली ज्ञान
- ४) 'मराठी कथा, रूप आणि परिसर', म. द. हातकणंगले पुणे, मार्च १९८६, पृ. २२.

डॉ.

प्रभाकर

राजेंद्र

मराठी भाषेचे दालन हे विविध साहित्यप्रकारांनी समृद्ध झालेले आहे. प्रत्येक काळात या साहित्यातील नवतेचे वेगवेगळे रूप आपल्याला पाहावयास मिळते. साहित्याची भाषा वापरताना लेखक अनपेक्षित अर्थव्यक्ती करत असतो. अनुभव कितीही नवीन असला, तरी अशा जुनाट भाषिक रूपांनी तो संपूर्ण कंगोऱ्यांसह ताजेपणा कायम ठेवून व्यक्त होत नाही. भाषिक रूपांना नवीन अर्थछटा प्राप्त करून देण्यासाठी रूढ झालेली प्रमाणके मोडणे आवश्यक ठरते.

नवतेचा विचार करताना कोणत्याही साहित्यकृतीचा, प्रकारांचा विचार करताना त्या त्या काळातील रूपके, प्रतीके आणि प्रतिमांचा विचार आवश्यक आहे, कारण नवतेचा विचार करताना या गोष्टी महत्त्वाच्या असतात. काळानुरूप ती बदलतात. त्याला वेगळे अर्थ प्राप्त होतात. ते समजावून घेणे आवश्यक असते. संवेदनेचाही विचार महत्त्वाचा आहे. प्राक्कथांनाही महत्त्व आहे. नवतेचा विचार या अंगाणे झाला, तर साहित्यात एक वेगळा विचार उभा राहू शकेल.

- संपादक



ISBN : 978-93-86387-33-2



यशोदीप पब्लिकेशन्स,
पुणे-३०.



9 789386 387332 >
₹ 160/-